

[2023] 6 एस. सी. आर 851

बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर.

बी.

महाराष्ट्र राज्य

(2010 की आपराधिक अपील सं. 1910)

29 मार्च, 2023

[सुधांशु धूलिया और जे. बी. पारदीवाला, जे. जे.]

दंड संहिता, 1860:

एसएस। 302 आर/डब्ल्यू 34 अभियोजन मामला कि पक्षों के बीच मौखिक विवाद के परिणामस्वरूप लड़ाई होती है जिसमें पहला सूचना देने वाला होता है

सिर पर हमला किया गया और मृतक को गंभीर हमले का सामना करना पड़ा और उसकी चोटों के कारण उसकी मौत हो गई-अपीलकर्ताओं ने यू/एस 242 आर/डब्ल्यू 34 के तहत दोषी ठहराया, और आजीवन कारावास की सजा सुनाई, हालांकि, ए-2 और ए-4 को बरी कर दिया-उच्च न्यायालय ने आदेश को बरकरार रखा-हस्तक्षेप-आयोजित: तीनों चश्मदीद गवाहों के मौखिक साक्ष्य के लिए नहीं बुलाया गया है

अदालत के लिए सुसंगत और कोई अच्छा कारण नहीं है कि वह नेत्रहीन संस्करण पर विश्वास करे जैसा कि नीचे दिए गए तीन चश्मदीद गवाहों के न्यायालयों द्वारा वर्णित है।

एक समवर्ती निष्कर्ष दर्ज किया कि वे विश्वसनीय गवाह हैं -

प्रतिपरीक्षा में बचाव पक्ष के वकील द्वारा दिए गए सुझाव

प्रत्यक्षदर्शी अपराध स्थल पर पहले सूचना देने वाले की उपस्थिति स्थापित करता है और हमले के तथ्य को भी स्वीकार किया जा सकता है-पीडब्लू 3 को रेज़ गेस्टे गवाह कहा जा सकता है

- एसएस। 6 और 1872 के अधिनियम के 7 में, जहां तक पीडब्लू-3 के बयान की स्वीकार्यता का संबंध है, आकर्षित किया जाएगा-चोटों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, वे खतरनाक हथियारों के कारण हुए थे, जिन्हें शरीर के महत्वपूर्ण हिस्से पर लगाया गया था।

एस का मामला। 302 - मामला 4 से एस के अपवाद के भीतर नहीं आएगा। 300 - यह मानते हुए कि घटना पल की गर्मी में हुई थी और लड़ाई भी अचानक हुई थी, इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि अपीलकर्ताओं ने मृतक पर एक खतरनाक हथियार से नौ बार किए जो निहत्थे थे और असहाय थे-साक्ष्य अधिनियम, 1872। 6 और 7.

धारा 300 का अपवाद 4-लागू होना: एक मामले को अपवाद 4 के भीतर लाने के लिए उसमें उल्लिखित सभी अवयवों को पाया जाना चाहिए।

[2023] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

प्रमाण:

मौखिक साक्ष्य-आयोजित का प्रमाणिक मूल्य: नेत्र साक्ष्य की प्रशंसा एक कठिन कार्य है कोई निश्चित या सीधा नहीं है

नेत्र साक्ष्य की सराहना के लिए जैकेट सूत्र-चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करने में, दो प्रमुख विचार यह है कि क्या मामले की परिस्थितियों में, घटना स्थल पर या ऐसी स्थितियों में उनकी उपस्थिति पर विश्वास करना संभव है जिससे उनके लिए उनके द्वारा दिए गए तथ्यों को देखना संभव हो और दूसरा, क्या उनके साक्ष्य में कुछ स्वाभाविक रूप से असंभव या अविश्वसनीय है।

प्रतिपरीक्षा-बचाव पक्ष के वकील द्वारा रियायत या तथ्य को स्वीकार करना-आयोजित की गई प्रकृति: बचाव पक्ष के वकील द्वारा किसी तथ्य की कोई भी रियायत या स्वीकार करना निश्चित रूप से उसके मुवक्किल के लिए बाध्यकारी होगा, सिवाय कानून के मुद्दे पर रियायत के-इस प्रकार, बचाव पक्ष के वकील द्वारा गवाह को प्रतिपरीक्षा में दिया गया सुझाव यदि किसी भी तरह से अपराध साबित करने वाला पाया जाता है तो निश्चित रूप से आरोपी को बाध्य करेगा-आरोपी बच नहीं सकता है।

याचिका कि उनके वकील के पास अपने मुवक्किल के खिलाफ प्रवेश की प्रकृति में सुझाव देने का कोई निहित अधिकार नहीं था।

सिद्धांत/सिद्धांत: रेस गेस्टे का सिद्धांत-आयोजित नियम: एस में सन्निहित नियम। 6 इसे आमतौर पर नियम के रूप में जाना जाता है इसका मतलब है कि एक तथ्य जो, हालांकि मुद्दे में नहीं है, मुद्दे में तथ्य के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि उसी का हिस्सा है।

लेन-देन अपने आप में प्रासंगिक हो जाता है-साक्ष्य अधिनियम, 1872-एस. एस. 6 और 7.

याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने कहा,

पकड़ना: 1.1 नेत्र साक्ष्य का मूल्यांकन एक कठिन कार्य है। नेत्र साक्ष्य के मूल्यांकन के लिए कोई निश्चित या सीधा-जैकेट सूत्र नहीं है। [पैरा 25] [865-ई]

1.2 प्रत्यक्षदर्शी के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करने में, दो प्रमुख विचार हैं कि क्या मामले की परिस्थितियों में, उनकी उपस्थिति पर विश्वास करना संभव है। घटना स्थल पर या ऐसी स्थितियों में जो उनके लिए उनके द्वारा बयान किए गए तथ्यों को देखना संभव बनाती हैं और दूसरा, क्या उनके साक्ष्य में कुछ स्वाभाविक रूप से असंभव या अविश्वसनीय है।

इन दोनों के संबंध में बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर.। वी. महाराष्ट्र राज्य

उनके बयानों का उस मूल्य पर प्रभाव पड़ेगा जो एक अदालत उनके साक्ष्य के साथ जोड़ेगी। यद्यपि जिन मामलों में अभियुक्त की याचिका मात्र इनकार है, वहां अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य की जांच अपने गुण-दोष के आधार पर की जानी चाहिए, जहां अभियुक्त एक निश्चित याचिका दायर करता है या एक सकारात्मक मामला सामने रखता है जो अभियोजन पक्ष के साथ असंगत है, ऐसी याचिका या मामले की प्रकृति और अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करते समय इसके संबंध में संभावनाओं को भी ध्यान में रखना होगा। [पैरा 27] [868-सी-ई] 1.3 तीनों चश्मदीद गवाहों पी. डब्ल्यू. 1,2,3 का मौखिक साक्ष्य सुसंगत है और अदालत के लिए कोई उचित कारण नहीं है

तीनों द्वारा बताए गए ऑक्युलर संस्करण पर विश्वास न करें

प्रत्यक्षदर्शी। निचली अदालत के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने तीनों चश्मदीद गवाहों के मौखिक साक्ष्य को बारीकी से देखा और एक समवर्ती निष्कर्ष दर्ज किया कि वे विश्वसनीय हैं

1.4 भारत के संविधान के अनुच्छेद 136 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए, यह न्यायालय आम तौर पर हस्तक्षेप नहीं करेगा। तथ्य के समवर्ती निष्कर्षों के साथ, बहुत विशेष को छोड़कर

परिस्थितियों में या नीचे दिए गए न्यायालयों द्वारा की गई गंभीर त्रुटि के मामले में। केवल जहां उच्च न्यायालय "दुखद परिस्थितियों" और "सिद्ध तथ्यों" की उपेक्षा करता है या "आपराधिक न्यायशास्त्र के अच्छी तरह से स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करता है और उन्हें गलत तरीके से लागू करता है" या अभियुक्त व्यक्तियों आदि को संदेह का लाभ देने से इनकार करता है, तो यह न्यायालय कानूनी रूप से गलत लोगों को सही करने के लिए कदम उठाएगा।

निर्णय लेते हैं। हस्तक्षेप केवल इस कारण से नहीं है कि यह न्यायालय एक अलग निष्कर्ष पर पहुंच सकता है, जब तक कि निष्कर्ष निकाले जाने के साथ छेड़छाड़ करने के लिए मजबूर करने वाली परिस्थितियां न हों और

अभियुक्त निर्दोष/दोषी थे। दोषसिद्धि के निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने की सीमाएँ हैं, जो प्रकृति में समवर्ती हैं। [पैरा 30] [871-सी-ई] 1.5 प्रतिपरीक्षा में एक गवाह को बचाव पक्ष के वकील द्वारा दिया गया सुझाव यदि अपराध करने की प्रकृति में पाया जाता है

किसी भी तरह से निश्चित रूप से अभियुक्त और अभियुक्त को बांध दिया जाएगा। इस दलील से बच नहीं सकते कि उनके वकील का कोई निहित [2023] 6 एस. सी. आर. नहीं था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अपने मुवक्किल के खिलाफ प्रवेश की प्रकृति में सुझाव देने का अधिकार। बचाव पक्ष के वकील द्वारा किसी तथ्य की कोई रियायत या स्वीकारोक्ति निश्चित रूप से उसके मुवक्किल के लिए बाध्यकारी होगी, सिवाय इसके कि कानून के मुद्दे पर रियायत। यह निवेदन कि प्रतिपरीक्षा में बचाव पक्ष के वकील द्वारा दिए गए सुझाव के लिए एक गवाह द्वारा दिया गया जवाब किसी भी मूल्य या उपयोगिता के योग्य नहीं है, यदि यह किसी भी तरह से आरोपी को दोषी ठहराता है, स्वीकार नहीं किया जा सकता है। [पैरा

38 , 39] [873 - बी-डी]

1.6 यह आपराधिक न्यायशास्त्र का एक प्रमुख सिद्धांत है कि अभियुक्त के खिलाफ मामले को उचित संदेह से परे स्थापित करने का प्रारंभिक बोझ अभियोजन पक्ष पर निर्भर करता है। यह कानून का एक प्राथमिक सिद्धांत भी है कि अभियोजन पक्ष को अपने पैरों पर अपना मामला साबित करना होता है और इससे लाभ या लाभ प्राप्त नहीं कर सकता है।

रक्षा की कमजोरी। यह न्यायालय एक पल के लिए भी यह सुझाव नहीं दे रहा है कि यदि अभियोजन पक्ष अपने पैरों पर अपने मामले को साबित करने में असमर्थ है, तो भी न्यायालय बचाव पक्ष के वकील द्वारा गवाह को दिए गए सुझावों के जवाब के रूप में साक्ष्य के आधार पर किसी आरोपी को दोषी ठहरा सकता है। तत्काल मामले में, यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि तीन चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य विश्वास को प्रेरित करते हैं और उनके साक्ष्य में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि वे अविश्वसनीय गवाह हैं। इस तरह के निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद, बचाव पक्ष के वकील द्वारा चश्मदीद गवाहों को दिए गए सुझावों को मजबूत करने के लिए, उपस्थिति स्थापित करने वालों के जवाब पर विचार किया जा सकता है।

अभियुक्त व्यक्तियों के साथ-साथ रात के समय प्रत्यक्षदर्शी। दूसरे शब्दों में कहें तो, यदि वे किसी भी तरह से दोषारोपण कर रहे हैं या अभिलेख पर किसी अन्य विश्वसनीय साक्ष्य के अभाव में स्वीकार के रूप में हैं, तो अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए अपने आप में सुझाव पर्याप्त नहीं हैं। यह सच है कि किसी सुझाव का कोई साक्ष्य मूल्य नहीं है, लेकिन कानून का यह प्रस्ताव हर समय अच्छा नहीं होगा और किसी मामले में प्रतिपरीक्षा के दौरान बचाव पक्ष का वकील ऐसा सुझाव दे सकता है जिसका जवाब सीधे आरोपी के खिलाफ जा सकता है और यह तत्काल मामले में ठीक यही हुआ। [पैरा 40] [873-ई-एच; 874-ए]

1.7 कानून का सिद्धांत कि एक आपराधिक मामले में, एक वकील के पास अपने मुवक्किल के खिलाफ प्रवेश करने का कोई निहित अधिकार नहीं है

मुकदमे की प्रगति केवल उन मामलों में अच्छी रहेगी जहां बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर.

वी. महाराष्ट्र राज्य

अभियोजन पक्ष द्वारा सबूत का वितरण कानून में अनुमत नहीं है। अभियोजन पक्ष की ओर से डॉक्टर की जांच करके पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को साबित करना अनिवार्य है। अभियुक्त पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट की सामग्री को स्वीकार नहीं कर सकता है जिससे दोषमुक्त हो जाता है।

अभियोजन पक्ष डॉक्टर की जांच करके कानून के अनुसार उसी की सामग्री को साबित करने के अपने कर्तव्य से। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि साक्ष्य अपने आप में कानून में अस्वीकार्य है तो बचाव पक्ष के वकील को अपनी सहमति से इसे स्वीकार्य बनाने का कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, बचाव पक्ष के वकील द्वारा गवाह को दिए गए सुझाव और ऐसे सुझावों का जवाब निश्चित रूप से सबूत का हिस्सा होगा और अदालत द्वारा आरोपी के अपराध को निर्धारित करने के लिए रिकॉर्ड पर अन्य सबूतों के साथ भरोसा किया जा सकता है। [पैरा 41,42] [874-बी-डी]

1.8 प्रतिपरीक्षा का मुख्य उद्देश्य अभिलेख पर सत्य का पता लगाना और न्यायालय को सत्य जानने में सहायता करना है। मामला। यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि कई बार बचाव पक्ष के वकील स्वयं एक पैराग्राफ में जिरह के दौरान उत्पन्न होने वाली विसंगतियों को स्पष्ट करते हैं और

स्वयं ने दूसरे पैराग्राफ में इसका खंडन किया। जिरह की रेखा हमेशा बचाव के आधार पर होती है जिसे वकील आरोपी का बचाव करने के लिए ध्यान में रखेगा। [पैरा 43] [874 ई]

1.9 गवाह को बदनाम करने या बचाव स्थापित करने की दृष्टि से प्रतिपरीक्षा के दौरान

संभाव्यता सुझावों की प्रधानता गवाह पर डाली जाती है लेकिन यदि ऐसे सुझाव, किसी भी तरह से अभियुक्त को दोषी ठहराने वालों के लिए जवाब निश्चित रूप से बाध्यकारी होगा और इसके समर्थन में रिकॉर्ड पर अन्य साक्ष्य के साथ विचार किया जा सकता है। हालाँकि, यह सब सुझावों की प्रकृति और किस विचार के साथ निर्भर करेगा।

ध्यान रखें कि इस तरह के सुझाव गवाह को दिए जाते हैं। [पैरा 44,45] [875 एफ-जी]

1.10 पीडब्लू-3 की प्रतिपरीक्षा में एक सुझाव

उन्हें बताया गया कि उन्होंने पीडब्लू-1 से पूछताछ की थी कि क्या हुआ था और पीडब्लू-1 ने बदले में पीडब्लू-3 को घटना के बारे में बताया। यह

बचाव पक्ष के वकील द्वारा पीडब्लू-3 को दिए गए सुझाव का सकारात्मक जवाब दिया गया। पीडब्लू-3 के साक्ष्य के इस हिस्से की पुष्टि पीडब्लू-1 के साक्ष्य से होती है।

3] 6 एस. सी. आर. का कारण।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

उक्त साक्ष्य का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि पीडब्लू 3 को रेज़ गेस्टे गवाह कहा जा सकता है। रेज़ गेस्टे का यह सिद्धांत अधिनियम 1872 की धारा 6 में सन्निहित है। इसका मतलब यह है कि एक तथ्य जो, हालांकि मुद्दे में नहीं है, मुद्दे में तथ्य के साथ इतना जुड़ा हुआ है कि "उसी लेनदेन का हिस्सा है" अपने आप में प्रासंगिक हो जाता है। उसी के हिस्से के रूप में विशेष कथन बनाने के लिए

लेन-देन के बयान घटना या पर्याप्त समकालीन के साथ एक साथ होने चाहिए जो इसकी घटना के दौरान या उसके तुरंत पहले या बाद में किए जाते हैं। अधिनियम 1872 की धारा 6 और 7 मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, जहां तक पीडब्लू-3 के घटना के बारे में पता चलने की स्वीकार्यता है, पीडब्लू-1 से तुरंत कि एबी पर गंभीर हमला किया गया था और पीडब्लू-1 को भी चोटें आई थीं और पीडब्लू-1 द्वारा अपने साक्ष्य में स्वीकार किया गया था, इसकी पूरी कठोरता से आकर्षित होगा। [पारस 46,47,49 और 50] [876-ई-जी; 877-ए; 878-डी-एफ]

1.11 इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि मृतक की मौत

यह गैर इरादतन हत्या के कारण हुआ है न कि दुर्घटना या आत्महत्या के कारण। धारा 300 के अपवाद के आवेदन के लिए अनिवार्य शर्त हमेशा यह है कि यह हत्या का मामला है, लेकिन आरोपी इसे उस धारा से बाहर लाने और इसे गैर-इरादतन हत्या का मामला बनाने के लिए अपवाद के लाभ का दावा करता है। इसलिए, यह माना जाता है कि यह हत्या का मामला होगा और अपवाद की प्रयोज्यता को दिखाना आरोपी का काम है। [पैरा 57] [890-ई]

1.12 मृतक को लगी चोटों की सीमा है

देखा गया, जैसा कि यह पी. डब्ल्यू. 7 के बयान से प्रतीत होता है जिसने पोस्टमार्टम किया था। दरांती और तलवार जैसे खतरनाक हथियारों से होने वाली चोटों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, जो शरीर के महत्वपूर्ण हिस्से पर लगाए गए थे, इस निष्कर्ष से कोई बच नहीं सकता है कि यह आई. पी. सी. की धारा 303 का मामला है। [पैरा 60] [891-बी सी]

1.13 यह निवेदन कि मामला इसके अंतर्गत आएगा

आई. पी. सी. की धारा 300 में 4 का अपवाद और इस तरह का लाभ अभियुक्त को दिया जाना स्वीकार नहीं किया जा सकता है। पल के लिए यह मानते हुए कि घटना पल की गर्मी में हुई थी और लड़ें यह भी अचानक था कि अपीलकर्ताओं ने मृतक बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. पर एक खतरनाक हथियार से नौ बार किए।

वी. महाराष्ट्र राज्य

निहत्थे और असहाय को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। आई. पी. सी. की धारा 300 के खंड (3) के अंतर्गत आने के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि अपराधी का इरादा मृत्यु का कारण बनना था, जब तक कि डी जानबूझकर शारीरिक चोट या पर्याप्त चोटों के कारण प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनता है। इस प्रकार, अपीलार्थियों द्वारा उच्च न्यायालय के निर्णय और आदेश में हस्तक्षेप करने के लिए कोई आग्रह नहीं किया गया है। [पैरा 61,62] [891-सी

भारवाड़ा भोगिनभाई हिरजिभाई बनाम। गुजरात राज्य आकाशवाणी

1983 एससी 753: [1983] 3 एससीआर 280; लीला राम बनाम। राज्य

हरियाणा ए. आई. आर. 1995 एस. सी. 3717; तहसीलदार सिंह बनाम। राज्य

यू. पी. ए. आई. आर 1959 एस. सी. 1012: [1959] पूरक। एससीआर 875 -

पर भरोसा किया।

राकेश कुमार उर्फ बबली बनाम। हरियाणा राज्य (1987) 2

एस. सी. सी. 34; तरुण बोरा उर्फ आलोक हज़ारिका बनाम। की स्थिति

केरल एयर 1966 एससी 1874: [1966] पूरक। एससीआर 230;
आंध्र प्रदेश राज्य बनाम। रायवरपु पुन्नय्या और

एक और (1976) 4 एससीसी 382: [1977] 1 एससीआर 601; सुखर

वी. उत्तर प्रदेश राज्य (1999) 9 एस. सी. सी. 507: [1999] 3 पूरक।

एस. सी. आर. 314; गोविंद पुत्र सोनेराम बनाम। एम. पी. राज्य (डीबी)

2005 Cri.LJ 1244; प्रकाश चंद बनाम। हिमाचल राज्य

प्रदेश (2004) 11 एससीसी 381: [2004] 3 पूरक। एससीआर

389 संदर्भित किया गया।

मामला कानून संदर्भ

[1983] 3 एससीआर 280

उस पर भरोसा करें

पैरा

उस पर भरोसा करें

ए. आई. आर 1995 एस. सी. 3717

पैरा

25

[1959] पूरक। एससीआर 875

उस पर भरोसा करें

पैरा

25

(1987) 2 एस. सी. सी. 34

पैरा

37

संदर्भित किया गया है

[1999] 3 पूरक। एससीआर 314

संदर्भित किया गया है

पैरा

48

[1977] 1 एससीआर 601

पैरा

54

संदर्भित किया गया है

[2004] 3 पूरक। एससीआर 389

पैरा

56

संदर्भित किया गया है

[1966] पूरक। एससीआर 230

संदर्भित किया गया है

61 [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय: 2010 की आपराधिक अपील सं. 1910।

2003 के सी. आर. एल. ए. सं. 637 में बॉम्बे में उच्च न्यायालय के न्यायिक निर्णय और आदेश से। के. एल. जंजीनी, पंकज कुमार सिंह, डॉ. विनोद कुमार तिवारी, कैलाश जे. कश्यप, अधिवक्ता। अपीलार्थियों के लिए।

अभिकल्प प्रताप सिंह, सिद्धार्थ धर्माधिकारी, आदित्य

अनिरुद्ध पांडे, भरत बागला, सौरव सिंह, सुश्री श्रेया सक्सेना, सुश्री यामिनी सिंह, अधिवक्ता। उत्तरदाता के लिए।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

जे. बी. पारदीवाला, जे.

1. विशेष अनुमति द्वारा यह अपील दो दोषी व्यक्तियों के कहने पर की गई है और यह 02.03.2009 दिनांकित निर्णय और आदेश के खिलाफ निर्देशित है।

बॉम्बे के उच्च न्यायालय द्वारा 2003 की आपराधिक अपील संख्या 637 में पारित किया गया, जिसके द्वारा उच्च न्यायालय ने ऊपर निर्दिष्ट आपराधिक अपील को खारिज कर दिया, और इस प्रकार दोषी ठहराए जाने के आदेश और विद्वान अतिरिक्त न्यायाधीश द्वारा पारित दिनांक 12.03.2003 की परिणामी सजा की पुष्टि की।

सत्र न्यायाधीश, पुणे ने 2001 के सत्र मामले संख्या 323 में दोनों अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता, 1860 (संक्षेप में, आई. पी. सी.) की धारा 34 के साथ पठित धारा 302 के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराते हुए उन्हें आजीवन कारावास और 5 लाख रुपये के जुर्माने की सजा सुनाई। 1000 / - प्रत्येक को इस शर्त के साथ कि जुर्माने का भुगतान न करने पर उन्हें आगे छह महीने के लिए कठोर कारावास से गुजरना होगा। 2. इस स्तर पर यह कहना अनुचित नहीं होगा कि न्यायालय में दो अपीलार्थियों सहित सभी चार व्यक्तियों पर मुकदमा चलाया गया था।

आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 302 और 323 के तहत दंडनीय अपराध के लिए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, पुणे। याचिकाकर्ताओं

इसमें मूल अभियुक्त संख्याएँ हैं। 1 और 3 जवाब। मूल आरोपी नंबर 2 और 4 को ट्रायल कोर्ट ने बरी कर दिया था।

रोग होने का कारण

3. अभियोजन पक्ष का मामला जैसा कि अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य में सामने आया है और प्रथम सूचना रिपोर्ट में भी विस्तृत है

कि घटना के दुर्भाग्यपूर्ण दिन यानी, 01.04.2001 को लगभग 11.15 शाम को, पहला सूचना देने वाला पीडब्लू 1, अर्थात्, असगर शेख (पूर्व। 7) अपने दोस्त अब्बास बेग (मृत) के साथ बात कर रहा था।

उस समय, जबकि बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. बी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

अपीलार्थी नं. 2 यहाँ कुछ अन्य व्यक्तियों के साथ बगल से गुजर रहा था, उसे मृतक अब्बास ने घेर लिया था। दोनों के बीच कुछ नोकझोंक हुई। कुछ समय बाद अपीलार्थी नं. 2, अपीलार्थी नं. 1 और अन्य दो सह अभियुक्तों के साथ, जिन्हें निचली अदालत ने बरी कर दिया था, मौके पर पहुंचे। एक लड़ाई शुरू हुई जिसमें पहले मुखबिर पीडब्लू 1 असगर शेख पर दरांती और तलवार जैसे हथियारों से उनके सिर पर हमला किया गया। प्रथम सूचनादाता पीडब्लू 1 के सिर पर यह हमला कथित रूप से अपीलार्थी संख्या 1 द्वारा किया गया है। पहले सूचना देने वाले के सिर पर खून बहने की चोट लगी। इसके बाद मृतक अब्बास बेग पर दरांती और तलवार से गंभीर हमला किया गया। अभियोजन पक्ष का मामला है कि अपीलार्थियों के हाथों में तलवार और दरांती के रूप में खतरनाक हथियार थे। मृतक अब्बास बेग के शरीर पर गंभीर चोटें आईं और अंततः उन्होंने दम तोड़ दिया।

4. पीडब्लू 1 द्वारा 2.04.2002 पर सुबह लगभग 2 बजे यानी उस समय से सिर्फ तीन घंटे के भीतर एक प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की गई थी।

घटना। खून बहने से गंभीर रूप से घायल हुए मृतक अब्बास बेग को पीडब्लू 3, नासिर खान के स्वामित्व वाले रिक्शा में अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल पहुंचने पर मृतक को मृत घोषित कर दिया गया।

5. एफ. आई. आर. एक्स. एच. 8 पीडब्लू 1 द्वारा दर्ज किया गया। असगर शेख पढ़ता है

इस प्रकार:

" आई अजगर इब्राहिम शेख 22 साल का, ऑक्यूपेशन टर्नर,

54 बी. पी./251 लोहिया नगर, स्लम क्षेत्र, पुणे में रहता है। इसके लिए मैं

मेरी शिकायत निम्नानुसार दर्ज करें।

मैं उपरोक्त पते पर अपनी माँ, पिता और बहन के साथ रह रहा हूँ। मैं अब्दुल वहाब शेख के स्वामित्व वाली कार्यशाला में पिछले तीन वर्षों से टर्नर के रूप में काम कर रहा हूँ।

नई गुणवत्ता के नाम पर गुरुवर पेठ, पुणे में

उपकरण। कल, यानी आई. डी. 1 पर, मैं कार्यशाला में रिपोर्ट करने के लिए सुबह 9 बजे अपने घर से निकला। मैंने पूरे दिन कार्यशाला में काम किया और शाम 7 बजे वापस आया। मेरे पास था

मेरा रात का खाना 11.15 बजे था और उसके बाद मैं बाहर चला गया क्योंकि मैं पानमासाला करना चाहता था। जब मैं श्री साई कार ऑटो कंसल्टेंट के नाम से दुकान के पास कहीं पहुँचा तो मेरी मुलाकात हुई।

मेरे दोस्त अब्बास बेग (मृतक) भी [2023] 6 एस. सी. आर. के निवासी हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

लोहियानगर, झुग्गी बस्ती क्षेत्र, पुणे। मैंने अपने दोस्त अब्बास को धोखा देना शुरू कर दिया। उस समय संतोष खाल्डे और एक दूसरा लड़का उस जगह से गुजर रहे थे जहाँ हम बात कर रहे थे। मेरे दोस्त अब्बास ने संतोष को देखा और मुझसे कहा कि इतनी रात को। मां चूड़ाने के लिए कहा जा रहा है? तुमहारा योजना

क्या है "। संतोष ने जवाब दिया कि उसकी कोई योजना नहीं है और वह प्रकृति के आह्वान का जवाब देने के लिए आगे बढ़ रहा है। लगभग 1 बजे, चार व्यक्ति, बालू खाल्डे, रमेश मोहिते, राजू मोहिते और संतोष खाल्डे इकट्ठे हुए और हमसे बात करने लगे। उस समय बालू खाल्डे ने उन्हें बजुला हाट कहा था। अब्बास बेग ने बालू खाल्डे से कहा कि "उससे क्या बात कर रहा है?" मुझसे बात करो। उस समय मैंने उनसे कहा, "कैको लफड़ा कर रहे हो?" बालू खाल्डे ने कोइता जैसा हथियार निकाला जो उनके पास था।

उसकी कमर में छिपा कर मेरे सिर पर मारा। रमेश मोहिते ने अब्बास बेग को पकड़ लिया और बालू खाल्डे ने उसे एक छोटी ब्लेड वाली तलवार से वार कर दिया। हम लोग चिल्लाने लगे। एक फिरोज पड़ोस में रहने वाले बाबुमियन शेख बाहर आए।

उसके घर जाकर उसने राजू मोहिते से कहा, "तुम किस बात को लेकर लड़ रहे हो?" संतोष खाल्डे ने फिरोज बाबुमियन को गाली दी। जब लोगों ने शुरू किया

घटना के स्थान पर इकट्ठा होते हुए, चारों

हमलावर भाग निकले। अब्बास बेग गंभीर रूप से घायल हो गए और वह नीचे गिर गए। उनके बाएं पैर, कलाई, दाहिने हाथ और दाहिने कंधे पर चोटें आई थीं। उनका खूब खून बह रहा था। आई.

घायल हालत में अब्बास को उठाया और उसे पास की चोकड़ी पर ले गया। उस समय, उसी झुग्गी में रहने वाला एक रिक्शा चालक नासिर, जिसे हम भी जानते थे, वहाँ आया। मैंने नासिर से अब्बास बेग पर नजर रखने का अनुरोध किया।

पहुँचें और पुलिस को फोन करें। तदनुसार, मैं और फिरोज

शेख लोहियानगर पुलिस स्टेशन गया और पुलिस को घटना की जानकारी दी। पुलिस पहुँची और तुरंत अब्बास बेग को पास के ससून अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया। लेकिन अस्पताल में डॉक्टर ने अब्बास बेग को मृत घोषित कर दिया।

6. मृतक के शव का पंचनामा अस्पताल में ही था। जाँच के एक भाग के रूप में, सीई पंचनामा का दृश्य तैयार किया गया था। मृतक के दागदार खून के कपड़े एकत्र किए गए और विश्लेषण के लिए फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में भेजे गए। पुलिस ने चारों अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। सभी अभियुक्तों के ईएस एकत्र किए गए और एफएसएल को भेजे गए। मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया।

जबकि अपीलार्थी बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

कहा जाता है कि वे पुलिस हिरासत में थे, उन्होंने अपनी स्वतंत्र इच्छा और इच्छा पर बयान दिए थे कि वे उस स्थान को दिखाएंगे जहां उन्होंने अपराध के हथियारों को छुपाया था, यानी दरांती और तलवार। अंततः, खोज पंचनामों को पंच गवाहों की उपस्थिति में तैयार किया गया। पुलिस द्वारा कई अन्य गवाहों के बयान दर्ज किए गए।

7. जाँच के अंत में आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 302 के तहत दंडनीय अपराध के लिए विद्वत मजिस्ट्रेट के न्यायालय में आरोप पत्र दायर किया गया था। विद्वान मजिस्ट्रेट ने मामले को सत्र न्यायालय को सौंप दिया क्योंकि अपराध विशेष रूप से सत्र न्यायालय द्वारा विचारण योग्य था।

8. ट्रायल कोर्ट ने Exh.8 के माध्यम से निम्नलिखित आरोप तैयार किया। अपीलार्थियों के खिलाफ बनाए गए आरोपों का अनुवादित संस्करण उद्धृत किया गया है।

नीचे:

" 1. कि आपने नोस पर आरोप लगाया। 1 4 से, 01.04.2001 पर, लगभग 11.45 शाम को या उसके आसपास, प्लॉट नंबर 54/BP, लोहियानगर, पुणे में, श्री साई कार ऑटो कंसल्टेंट नामक दुकान के सामने,

या तो व्यक्तिगत रूप से या अपने सामान्य को आगे बढ़ाने के लिए

इरादे से, हत्या की, जानबूझकर या जानबूझकर अब्बास सनाउल्ला बेग की मौत का कारण बना, और इस तरह भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत या भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ पठित धारा 302 के तहत और मेरे संज्ञान में दंडनीय अपराध किया।

और

2) कि आपने नोस पर आरोप लगाया। 1 4 तक, उपरोक्त दिन, तिथि, समय और स्थान पर और उसी लेन-देन के दौरान, या तो व्यक्तिगत रूप से या आपके सामान्य लेनदेन को आगे बढ़ाने के लिए।

इरादे से, स्वेच्छा से शिकायतकर्ता अजगर को चोट पहुँचाई

इब्राहिम शेख, और इस प्रकार भारतीय दंड संहिता की धारा 323 के तहत दंडनीय अपराध किया। भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ पठित धारा 323,

और मेरे संज्ञान में।

और

3) कि आपने नोस पर आरोप लगाया। 1 4 तक, उपरोक्त दिन, तिथि, समय और स्थान पर और उसी लेनदेन के दौरान,

या तो व्यक्तिगत रूप से या आपके सामान्य [2023] 6 एस. सी. आर. को आगे बढ़ाने के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इरादे से, स्वेच्छा से शिकायतकर्ता अजगर को चोट पहुँचाई

इब्राहिम शेख, दरांती और तलवार के माध्यम से, जिसका उपयोग किया जाता है

शिकायतकर्ता, और इस प्रकार दंडनीय अपराध किया भारतीय दंड संहिता की धारा 324 के तहत या

भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ पठित धारा 324, और मेरे संज्ञान में।

और

4) कि आपने नोस पर आरोप लगाया। 1 4 तक, उपरोक्त दिन, तिथि पर,

समय और स्थान और उसी लेन-देन के दौरान,

इरादा, जानबूझकर अपमानित किया गया और इस तरह सुरक्षा दी गई शिकायतकर्ता अजगर इब्राहिम शेख को, इरादा या

यह जानते हुए कि इस तरह के उकसावे का कारण बनने की संभावना है

भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ और मेरे भीतर संज्ञान।

और मैं एतद्वारा निर्देश देता हूँ कि उपरोक्त मामले में मेरे द्वारा आप पर मुकदमा चलाया जाए।

आरोप "।

9. अभियोजन पक्ष ने समर्थन में निम्नलिखित मौखिक साक्ष्य प्रस्तुत किए

मामला:

(1) पीडब्लू 1

असगर शेख -

Ex. 7

Ex. 9

(2) पीडब्लू 2

फिरोज शेख

(3) पीडब्लू 3

नासिर खान -

		Ex. 10
(4) पीडब्लू 4	असलम खान	
		Ex. 11
(5) पीडब्लू 5		
		Ex. 14
	महेश कुमार जैन	
(6) पीडब्लू 6		
		Ex. 15
	सुहास कलासे	
(7) पीडब्लू 7		
	डॉ. श्रीकांत चांडेकर	
		Ex. 18
(8) पीडब्लू 8		
	मुबारक बेग	
		Ex. 21
(9) पीडब्लू 9		
	महेंद्र अरोकडे	
		Ex. 22
(10) पीडब्लू 10		
	बाबा शेख	
		Ex.

38 बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

10. अभियोजन पक्ष द्वारा निम्नलिखित दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किए गए थे:

(i) पंचनामा की जाँच करें

(ii) पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट

(iii) स्पॉट पंचनामा (अपराध पंचनामा का दृश्य)

(iv) गिरफ्तारी और व्यक्तिगत तलाशी

(v) शिकायतकर्ता के कपड़े जब्त करना।

(vi) मृतक के कपड़े जब्त करना।

11. अभियोजन पक्ष के मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य के पूरा होने के बाद, दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 (संक्षेप में, 'दंड प्रक्रिया संहिता') के तहत अपीलार्थियों के बयान दर्ज किए गए, जिसमें अपीलार्थियों ने कहा कि शिकायत झूठी थी। उन्होंने आगे सीआरपीसी की धारा 313 के तहत अपने लिखित बयान में कहा कि वे एक हिंदी एकता मंडल के कार्यकर्ता थे। 09.03.2001 पर, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच तनाव बढ़ गया क्योंकि अल्पसंख्यक समुदाय के कुछ लोगों ने गणेश की मूर्ति को क्षतिग्रस्त कर दिया। इस संबंध में पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई थी। ऐसी परिस्थितियों में गवाहों ने उनके खिलाफ झूठा बयान दिया।

12. विचारण के समापन पर, विद्वत विचारण न्यायाधीश ने अपीलार्थियों को धारा 302 के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी ठहराया।

आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ और दोनों को सजा सुनाई गई जैसा कि यहाँ पहले कहा गया है। मूल अभियुक्त सं. 2 और 4 को सभी आरोपों से बरी करने का आदेश दिया गया।

13. ऊपर उल्लिखित ऐसी परिस्थितियों में, दोनों अपीलार्थी वर्तमान अपील के साथ इस न्यायालय के समक्ष हैं।

अपीलार्थियों के स्वयं के बारे में सुझाव

14. अपीलार्थियों की ओर से पेश विद्वान वकील ने जोरदार ढंग से कहा कि उच्च न्यायालय ने खारिज करने में गंभीर त्रुटि की है

विचारण न्यायालय द्वारा पारित निर्णय और दोषसिद्धि के आदेश के विरुद्ध इसमें दो अपीलार्थियों द्वारा दायर अपील। विद्वान वकील के अनुसार, उच्च न्यायालय यह समझने में विफल रहा कि तथाकथित चश्मदीद गवाहों के साक्ष्य पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता था। विद्वान वकील के अनुसार, रिकॉर्ड पर ऑक्युलर संस्करण किसी को प्रेरित नहीं करता है

आत्मविश्वास और त्याग किए जाने के योग्य।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

15. विद्वान वकील ने आगे प्रस्तुत किया कि बहुत उपस्थिति

पहले सूचना देने वाले पीडब्लू 1 असगर शेख के बारे में संदेह है क्योंकि हालाँकि वह दावा करता है कि हमले के दौरान उसके सिर पर चोट लगी है, फिर भी नहीं।

उनके द्वारा चिकित्सा उपचार किया गया था और रिकॉर्ड पर कोई चिकित्सा प्रमाण पत्र नहीं है कि उनके सिर पर कोई चोट लगी थी। ऐसे में

परिस्थितियों में, विद्वान वकील के अनुसार, पीडब्लू 1 के कहने पर पूरी प्रथम सूचना रिपोर्ट अविश्वसनीय है।

16. विद्वान वकील ने आगे प्रस्तुत किया कि भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 27 के तहत हथियारों की खोज (

17. अंत में, अपीलार्थियों की ओर से पेश विद्वान वकील ने जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया कि भले ही अभियोजन पक्ष का पूरा मामला माना जाता है कि यह मामला अधिक से अधिक गैर इरादतन हत्या का होगा जो हत्या के बराबर नहीं है। विद्वान वकील के अनुसार, मामला आई. पी. सी. की धारा 300 के अपवाद 4 के दायरे में आता है।

18. ऊपर उल्लिखित ऐसी परिस्थितियों में, विद्वान वकील प्रार्थना करता है कि उसकी अपील में योग्यता होने के कारण, इसकी अनुमति दी जा सकती है और अपीलार्थियों को सभी आरोपों से बरी किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, उन्होंने प्रार्थना की कि दोषसिद्धि को धारा 302 के तहत एक से बदला जा सकता है।

आई. पी. सी. की धारा 304 भाग 1 को अपवाद 4 का लाभ देकर

आईपीसी की धारा 300।

राज्य के स्वयं के बारे में टिप्पणियां

19. दूसरी ओर महाराष्ट्र राज्य की ओर से पेश विद्वान वकील श्री अभिकल्प प्रताप सिंह ने इसका कड़ा विरोध किया है।

यह अपील प्रस्तुत करती है कि उच्च न्यायालय द्वारा अपील को खारिज करने में कानून की किसी भी त्रुटि की बात न करने में कोई त्रुटि नहीं की गई है, जिससे दोषसिद्धि के आदेश और विचारण न्यायालय द्वारा पारित परिणाम सजा की पुष्टि होती है।

20. वह प्रस्तुत करेगा कि चश्मदीद गवाहों के नेत्र संबंधी संस्करण पर संदेह करने का कोई उचित कारण नहीं है, जो रिकॉर्ड में आया है। उन्होंने आगे कहा कि चश्मदीद गवाहों के लिए झूठ बोलने का कोई अच्छा कारण नहीं था

अपीलार्थियों को कथित अपराध में इसमें फंसाएं।

21. विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि मामले को आई. पी. सी. की धारा 300 के अपवाद 4 के दायरे में लाने के लिए कोई मामला नहीं बनाया गया है।

बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

उन्होंने दृढ़ता से कहा कि मृतक के शरीर पर दरांती और तलवार जैसे खतरनाक हथियारों से नौ चोटें आई हैं। इसमें कहा जा सकता है कि अपीलकर्ताओं ने अनुचित लाभ उठाया और क्रूर तरीके से काम किया।

22. अंत में, राज्य की ओर से पेश विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि हथियारों की खोज के आचरण की ओर इशारा करती है

अभियुक्त व्यक्ति और ऐसा आचरण अधिनियम 1872 की धारा 8 के तहत एक प्रासंगिक तथ्य है जो नेत्र संबंधी संस्करण के साथ मिलकर इसका समर्थन करता है

अभियोजन पक्ष का मामला पूरी तरह से। 23. ऊपर उल्लिखित ऐसी परिस्थितियों में, राज्य की ओर से पेश विद्वान वकील ने प्रार्थना की कि वर्तमान अपील में कोई योग्यता नहीं होने के कारण, उसे खारिज किया जा सकता है।

विश्लेषण

24. पक्षों की ओर से उपस्थित विद्वान वकील को सुनने और अभिलेख पर सामग्री को देखने के बाद, हमारे विचार के लिए एकमात्र सवाल यह है कि क्या उच्च न्यायालय ने कोई अपराध किया है।

विवादित निर्णय और आदेश पारित करने में त्रुटि।

मौखिक प्रमाण की उपस्थिति

25. नेत्र साक्ष्य का मूल्यांकन एक कठिन कार्य है। नेत्र साक्ष्य के मूल्यांकन के लिए कोई निश्चित या सीधा-जैकेट सूत्र नहीं है। आपराधिक मामले में नेत्र साक्ष्य की सराहना के लिए न्यायिक रूप से विकसित सिद्धांतों को निम्नानुसार गिना जा सकता है:

" I. एक गवाह के साक्ष्य की सराहना करते समय, दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि क्या गवाह के साक्ष्य को समग्र रूप से पढ़ा जाए तो इसमें सच्चाई का घेरा प्रतीत होता है। एक बार जब यह धारणा बन जाती है, तो निस्संदेह न्यायालय के लिए यह आवश्यक है कि वह साक्ष्य की अधिक विशेष रूप से समग्र रूप से साक्ष्य में बताई गई कमियों, कमियों और दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए जांच करे और यह पता लगाने के लिए उनका मूल्यांकन करे कि क्या यह गवाह द्वारा दिए गए साक्ष्य के सामान्य सार के खिलाफ है और क्या साक्ष्य का पूर्व मूल्यांकन इसे विश्वास के अयोग्य बनाने के लिए हिलाया गया है।

II. यदि जिस न्यायालय के समक्ष गवाह साक्ष्य देता है, उसे गवाह द्वारा दिए गए साक्ष्य के सामान्य सार के बारे में राय बनाने का अवसर मिलता है, तो जिस अपीलीय न्यायालय को यह लाभ नहीं था, उसे निचली अदालत द्वारा साक्ष्य की सराहना को उचित महत्व देना होगा और जब तक कि कोई भारी और दुर्भावनापूर्ण कारण न हों [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

IV. तुच्छ मामलों पर मामूली विसंगतियां जो मामले के मूल को नहीं छूती हैं, साक्ष्य से यहाँ या वहाँ संदर्भ से फटे वाक्यों को लेकर अति तकनीकी दृष्टिकोण, संलग्न करना जाँच अधिकारी द्वारा की गई किसी तकनीकी त्रुटि का महत्व मामले की जड़ तक नहीं जाना सामान्य रूप से समग्र रूप से साक्ष्य को अस्वीकार करने की अनुमति नहीं देगा।

V. किसी घटना के कथन में केवल भिन्नताओं (या तो दो गवाहों के साक्ष्य के बीच या एक ही गवाह के दो बयानों के बीच) पर अपनाए जाने वाला बहुत गंभीर दृष्टिकोण न्यायिक जांच के लिए एक अवास्तविक दृष्टिकोण है।

VIII. अवलोकन की शक्तियाँ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होती हैं। जिसे एक देख सकता है, दूसरा नहीं भी देख सकता है। एक वस्तु या गतिविधि एक व्यक्ति के दिमाग पर अपनी छवि बना सकती है जबकि यह दूसरे की ओर से किसी का ध्यान नहीं जा सकता है। IX. बहुत से लोग एक बातचीत को सटीक रूप से याद नहीं कर सकते हैं और उनके द्वारा उपयोग किए गए या उनके द्वारा सुने गए शब्दों को पुनः प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। वे केवल बातचीत के मुख्य उद्देश्य को याद कर सकते हैं। एक गवाह से मानव टेप रिकॉर्डर होने की उम्मीद करना अवास्तविक है।

X. किसी घटना के सटीक समय, या किसी घटना की समय अवधि के संबंध में, आमतौर पर, लोग पूछताछ के समय क्षण की गति पर अनुमान लगाकर अपना अनुमान लगाते हैं। और लोगों से बहुत सटीक या विश्वसनीय अनुमान लगाने की उम्मीद नहीं की जा सकती है बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर।

वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

ऐसे मामलों में। पुनः, यह व्यक्तियों की समय-बोध पर निर्भर करता है जो व्यक्ति-दर-व्यक्ति भिन्न होता है।

जब बाद में पूछताछ की गई। बारहवीं। एक गवाह, हालांकि पूरी तरह से सच्चा है, अदालत के माहौल और वकील द्वारा छेद करने वाली प्रतिपरीक्षा और घबराहट के कारण तथ्यों को मिलाकर भ्रमित होने के लिए उत्तरदायी है।

घटनाओं का क्रम, या पल भरते ही कल्पना से विवरण भरें। गवाह का अवचेतन मन कभी-कभी मूर्ख दिखने या होने के डर के कारण काम करता है।

अविश्वासी हालांकि गवाह एक सच्चा और ईमानदार दे रहा है

उसके द्वारा देखी गई घटना का लेखा।

तेरहवीं। एक पूर्व कथन हालांकि इसके साथ असंगत प्रतीत होता है

साक्ष्य आवश्यक रूप से पर्याप्त नहीं होना चाहिए विरोधाभास। जब तक कि पूर्व कथन में ऐसी शक्ति न हो कि

बाद के कथन को बदनाम करना, भले ही बाद का कथन कुछ हद तक पूर्व के साथ भिन्न हो, यह सहायक नहीं होगा

उस गवाह का खंडन करें।

[भारवाड़ा भोगिनभाई हिरजिभाई बनाम देखें। गुजरात राज्य 1983 क्रि एल. जे. 1096: (ए. आई. आर. 1983 एस. सी. 753) लीला राम बनाम हरियाणा राज्य ए. आई. आर. 1995 एस. सी. 3717 और तहसीलदार सिंह बनाम। उत्तर प्रदेश राज्य (ए. आई. आर.)

1959 एससी 1012)]

26. जब घायल चश्मदीद गवाह का सबूत होना है

न्यायालयों द्वारा प्रतिपादित कम उल्लेखनीय कानूनी सिद्धांतों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:

(क) समय और स्थान पर घायल चश्मदीद गवाह की उपस्थिति।

घटना पर संदेह नहीं किया जा सकता है जब तक कि सामग्री न हो

उसके बयान में विरोधाभास। (ख) जब तक कि यह साक्ष्य द्वारा अन्यथा स्थापित नहीं किया जाता है, यह विश्वास किया जाना चाहिए कि एक घायल गवाह वास्तविक दोषियों को अनुमति नहीं देगा।

भागने और आरोपी को गलत तरीके से फंसाने के लिए।

(ग) घायल गवाह के साक्ष्य का अधिक प्रमाणिक मूल्य होता है और जब तक कि सम्मोहक कारण मौजूद न हों, तब तक उनके बयानों को लागू नहीं किया जा सकता है।

हल्के से त्याग दें।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

(घ) घायल गवाह के साक्ष्य पर प्राकृतिक आचरण में कुछ अलंकरण या मामूली विरोधाभासों के कारण संदेह नहीं किया जा सकता है।

(ई) यदि किसी घायल गवाह के साक्ष्य में कोई अतिशयोक्ति या अभौतिक अलंकरण है, तो इस तरह के विरोधाभास, अतिशयोक्ति या अलंकरण को घायल के साक्ष्य से हटा दिया जाना चाहिए, लेकिन पूरे साक्ष्य से नहीं।

(च) अभियोजन पक्ष के संस्करण के व्यापक आधार को ध्यान में रखा जाना चाहिए और समय के साथ स्मृति की हानि के कारण होने वाली विसंगतियों को त्याग दिया जाना चाहिए।

27. प्रत्यक्षदर्शियों के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करने में, दो प्रमुख विचार हैं कि क्या, की परिस्थितियों में

मामले में, घटना स्थल पर या ऐसी स्थितियों में उनकी उपस्थिति पर विश्वास करना संभव है जिससे उनके लिए उनके द्वारा दिए गए तथ्यों को देखना संभव हो और दूसरा, क्या उनके साक्ष्य में कुछ स्वाभाविक रूप से असंभव या अविश्वसनीय है। इन दोनों विचारों के संबंध में, या तो उन गवाहों से प्राप्त परिस्थितियों या उनकी उपस्थिति को अस्थिर करने या उनके बयानों की सत्यता को बदनाम करने के लिए अन्य साक्ष्य द्वारा स्थापित परिस्थितियों का उस मूल्य पर प्रभाव पड़ेगा जो एक अदालत उनके साक्ष्य के साथ जोड़ेगी।

यद्यपि जिन मामलों में अभियुक्त की याचिका मात्र इनकार है, वहां अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य की जांच अपने गुण-दोष के आधार पर की जानी चाहिए, जहां अभियुक्त एक निश्चित याचिका दायर करता है या एक सकारात्मक मामला सामने रखता है जो अभियोजन पक्ष के साथ असंगत है, ऐसी याचिका या मामले की प्रकृति और अभियोजन पक्ष के साक्ष्य के मूल्य का आकलन करते समय इसके संबंध में संभावनाओं को भी ध्यान में रखना होगा।

28. कानून के उपरोक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, हमने तीनों महत्वपूर्ण गवाहों यानी पीडब्लू 1 के मौखिक साक्ष्य पर गौर किया।

असगर शेख (Exh. 7), पीडब्लू 2 फिरोज बाबुमियान शेख (एक्सएच। 9) और पीडब्लू 3 नासिर खान (एक्सएच। 10)। तीनों चश्मदीद गवाहों का मौखिक साक्ष्य सुसंगत है और हमारे लिए तीन चश्मदीद गवाहों द्वारा बताए गए ऑक्युलर संस्करण पर अविश्वास करने का कोई अच्छा कारण नहीं है। ट्रायल कोर्ट के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने ऊपर उल्लिखित तीनों चश्मदीद गवाहों के मौखिक साक्ष्य को बारीकी से देखा और एक समवर्ती निष्कर्ष दर्ज किया कि वे विश्वसनीय गवाह हैं।

में पैराग्राफ 9 और 10 के जवाब में कहा:

29. उच्च न्यायालय ने अपने विवादित निर्णय

बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

" 9. सबसे पहले, अपीलार्थियों की ओर से यह तर्क दिया जाता है कि पी. डब्ल्यू. सं. का मूल साक्ष्य। 1 और 2, कथित चश्मदीद गवाहों को उतना ही भरोसेमंद नहीं माना जा सकता जितना कि वे इच्छुक हैं और गवाहों से संबंधित हैं। मृतक अब्बास बेग। दूसरा, यह तर्क दिया जाता है कि अभियुक्त व्यक्तियों के नामों का तत्काल खुलासा नहीं किया गया था

जब घायल अब्बास को लोहियानगर पुलिस चौकी लाया गया और जब अब्बास और दोनों घायल पी. डब्ल्यू. नं. 1 और 2 को चिकित्सा उपचार के लिए सासून अस्पताल भेजा गया, हमले का कोई इतिहास नहीं दिया गया था। तीसरा, यह तर्क दिया जाता है कि पी. डब्ल्यू. 1, शिकायतकर्ता ने यह उल्लेख करके अपनी कहानी में सुधार किया था कि अब्बास को सिर पर चोट लगी थी और उसने अपनी शिकायत देते समय इसका उल्लेख नहीं किया था। चौथा, यह है

तर्क दिया कि मुख्य महत्वपूर्ण चोट घटनाओं के सामान्य क्रम में थी, अब्बास की मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त चोट संख्या 9 है क्योंकि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार केवल आरोपी को जिम्मेदार ठहराया गया था

सं. 3 अर्थात् अपीलार्थी सं. 2 क्योंकि यह तलवार के उपयोग से किया गया था और इस प्रकार यह अपीलार्थी सं. 1 अभियुक्त द्वारा की गई चोट नहीं थी। इस तरह के अंतिम तर्क का प्रचार करके, इसने अपीलार्थी की ओर से इस बात पर जोर दिया कि अब्बास की मृत्यु हुई थी सीरियल नं. में चोट लगने के कारण। 9 पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में और इस तरह अपीलार्थी आरोपी नंबर 1 को गिरफ्तार नहीं किया जा सका

अब्बास की मौत के लिए जिम्मेदार, आगे तर्क दिया।

10. इस तरह के तर्कों पर विचार करते समय, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, अपीलार्थियों की ओर से हमने सावधानीपूर्वक अध्ययन किया है पी. डब्ल्यू. 1 और 2 और आनुषंगिक गवाह का भी ठोस साक्ष्य, जो घटनाओं के प्रमुख हिस्से की पुष्टि करता है अर्थात् P.W.No.3 और यह कहा जाना चाहिए कि लोहियानगर पुलिस चौकी पहुंचने के तुरंत बाद पी. डब्ल्यू. 1 द्वारा शिकायत दर्ज की गई थी।

और उस समय तक कहा कि अब्बास को भी पुलिस चौकी लाया गया था और बाद में इलाज के लिए सासून अस्पताल भेजा गया था, हालांकि, भर्ती होने पर उसे मृत घोषित कर दिया गया था। पी. डब्ल्यू. 1 के ठोस साक्ष्य में यह भी है कि वह और पी. डब्ल्यू. 2 ने पुलिस के साथ सासून अस्पताल में इलाज करवाया था।

उपचार, यह एक तथ्यात्मक स्थिति है कि कोई चिकित्सा नहीं है

पी. डब्ल्यू. सं. द्वारा लगी चोट के संबंध में अभियोजन पक्ष द्वारा अभिलेख पर लाया गया प्रमाण पत्र। 1 और 2 और इस तरह की तथ्यात्मक स्थिति ने सत्र न्यायालय को यह अभिनिर्धारित करने के लिए प्रेरित किया कि [2023] 6 एस. सी. आर. के तहत दंडनीय अपराध के लिए कोई आरोप स्थापित नहीं किया गया था।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

शिकायतकर्ता गवाह संख्या 1 पर हमले के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 34 के साथ धारा 324 पढ़ी गई। यह भी देखा गया है कि अब्बास की मृत्यु कई चोटों के कारण हुई थी, हालांकि जैसा कि चिकित्सा अधिकारी, पी. डब्ल्यू. नंबर 7, ने मुख्य रूप से कहा था

चोट जो सामान्य रूप से अब्बास की मृत्यु का कारण बन सकती थी, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में उल्लिखित चोट संख्या 9 है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जाना चाहिए कि अब्बास को लगी सभी चोटें उनकी परिणामी मृत्यु का कारण थीं और यह कि एक भूमिका का श्रेय आरोपी अपीलार्थियों को संबंधित हथियारों का उपयोग करने के लिए दिया गया था, अर्थात् अनुच्छेद No.16 दरांती और अनुच्छेद संख्या 17 एक तलवार।

30. भारत के संविधान के अनुच्छेद 136 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए, यह न्यायालय आम तौर पर तथ्य के समवर्ती निष्कर्षों में हस्तक्षेप नहीं करेगा, सिवाय बहुत विशेष परिस्थितियों में या नीचे दिए गए न्यायालयों द्वारा की गई घोर त्रुटि के मामले में। केवल जहां उच्च न्यायालय "दुखद परिस्थितियों" और "सिद्ध तथ्यों" की उपेक्षा करता है या "आपराधिक न्यायशास्त्र के अच्छी तरह से स्थापित सिद्धांतों का उल्लंघन करता है और गलत तरीके से लागू करता है" या अभियुक्त व्यक्तियों आदि को संदेह का लाभ देने से इनकार करता है, तो यह न्यायालय कानूनी रूप से गलत निर्णयों को सही करने के लिए कदम उठाएगा। हमें केवल इस कारण से भी हस्तक्षेप नहीं करना है कि हम एक अलग निष्कर्ष पर पहुँच सकें, जब तक कि, निश्चित रूप से, निष्कर्ष निकाले जाने के साथ छेड़छाड़ करने के लिए मजबूर करने वाली परिस्थितियाँ न हों और यह कि आरोपी निर्दोष थे /

दोषी हैं। निस्संदेह, दोषसिद्धि के निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने की सीमाएँ हैं, जो प्रकृति में समवर्ती हैं।

31. इस अपील की सुनवाई के दौरान, हमने कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात भी देखी, जो मामले की जड़ तक जा रही थी। 32. हमने देखा कि मूल प्रथम सूचनादाता, पीडब्लू 1 असगर शेख (Exh.7) की प्रतिपरीक्षा में, कुछ सुझाव दिए गए थे

उसे बचाव पक्ष के वकील द्वारा। हम पहले सूचना देने वाले की प्रतिपरीक्षा के प्रासंगिक भाग को उद्धृत करते हैं:

" हम पर हमला अचानक हुआ था। पहला झटका मुझ पर लगा

सिर। मेरे सिर पर बुरी तरह से हमला किया गया। हमले के कारण मुझे खून बहने की चोट लगी। यह सच नहीं है कि हमले के कारण मुझे घबराहट महसूस हुई। हाँ, लेकिन मुझे दर्द हुआ। उस समय मुझे नहीं लगा कि मुझे अपनी जान बचानी चाहिए। मुझे नहीं लगा कि मुझे भागना चाहिए या मुझे खुद को छिपाने की कोशिश करनी चाहिए। मैं उस तरफ चला गया

लोहिया नगर पुलिस चौकी। मुझे लगा कि बिना किसी कारण के मुझ पर हमला किया जा रहा है। अब्बास चिल्ला रहा था जबकि वह

हमला किया जा रहा था।

बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

33. उपरोक्त से हमारा विचार है कि चश्मदीद गवाहों की जिरह में बचाव पक्ष के वकील द्वारा दिए गए सुझाव अपराध स्थल पर पीडब्लू 1 असगर शेख की उपस्थिति को स्थापित करते हैं और हमले के तथ्य को भी स्वीकार किया जा सकता है। सुझावों का जवाब अपीलार्थियों के लिए विद्वान वकील द्वारा प्रस्तुत किए गए निवेदन का जवाब देता है कि पीडब्लू 1 असगर शेख पर विश्वास या भरोसा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि रिकॉर्ड में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे यह संकेत मिले कि वह एक घायल चश्मदीद गवाह था। कहा जा सकता है कि बचाव पक्ष ने पीडब्लू असगर शेख की उपस्थिति को स्वीकार किया था। जब पीडब्लू 1 असगर शेख की प्रतिपरीक्षा के उपरोक्त भाग को ध्यान में लाया गया

बचाव पक्ष के वकील, उन्होंने प्रस्तुत किया कि बचाव पक्ष के वकील द्वारा एक गवाह को उसकी प्रतिपरीक्षा में दिए गए सुझाव का कोई साक्ष्य मूल्य नहीं है और भले ही वह किसी भी तरह से दोषारोपण कर रहा हो, लेकिन आरोपी को बाध्य नहीं करेगा क्योंकि बचाव पक्ष के वकील के पास आरोपी को दोष देने वाले तथ्यों के अपराध को स्वीकार करने का कोई निहित अधिकार नहीं है। 34. विद्वान वकील के अनुसार इस तरह के सुझाव गवाह की विश्वसनीयता पर महाभियोग चलाने के लिए रक्षा रणनीति का एक हिस्सा हो सकते हैं।

अभियोजन पक्ष के लिए आवश्यक अपराध का प्रमाण गवाह को दी गई संतुष्टि पर निर्भर नहीं करता है।

35. तरुण बोरा उर्फ आलोक हजारीका बनाम। असम राज्य

2002 सी. आर. आई. में सूचित किया गया। एलजे 4076, इस न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ टाडा सत्र मामले में नामित अदालत, गुवाहाटी द्वारा पारित आदेश के खिलाफ एक अपील पर विचार कर रही थी, जिसमें अपीलार्थी को आतंकवादी और विघटनकारी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, 1987 की धारा 3 (1) और 3 (5) के साथ पठित आईपीसी की धारा 365 के तहत दोषी ठहराया गया था।

36. उपरोक्त मामले में, इस न्यायालय ने अभिलेख पर साक्ष्य पर विचार करते हुए एक सुझाव पर ध्यान दिया जो एक गवाह के सामने रखा गया था

और अभियुक्त द्वारा दिए गए सुझाव पर गवाह द्वारा दिए गए उत्तर पर विचार करते हुए, इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अभियुक्त की उपस्थिति स्वीकार कर ली गई थी। हम पैराग्राफ 15, 16 और 17 के जवाब में इस न्यायालय द्वारा की गई निम्नलिखित टिप्पणियों को लाभ के साथ उद्धृत करते हैं:

" 15. गवाह ने आगे कहा कि हमले के दौरान हमलावर ने उस पर यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) के बारे में सेना को जानकारी देने का आरोप लगाया। उन्होंने आगे कहा कि कहा कि तीसरी रात को उन्हें अंधा करके ले जाया गया

साइकिल पर सवार होकर दूसरी जगह गए और जब उनकी आँखें खुली तो उन्होंने अपने छोटे भाई कुमुद काकती [2023] 6 एस. सी. आर. को देखा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

(पी. डब्ल्यू.-2) और उनकी पत्नी श्रीमती. प्रेमा काकती (पीडब्लू-3)। यह स्थान दुलियापथेर था, जो लगभग 6 से 7 किलोमीटर दूर है। अपने गाँव सकराही से दूर। गवाह ने अपीलार्थी-तरुण बोरा की पहचान की और कहा कि यह वही है जो उसे घटना की तारीख को नंदीश्वर बोरा के आवास से राजदूत कार में ले गया था।

16. जिरह में गवाह ने इस प्रकार कहा:

" अभियुक्त-तरुण बोरा ने न तो मेरी आँखों को अंधा किया और न ही उस पर हमला किया

मुझे "।

17.

जिरह का यह हिस्सा पूरे प्रकरण में आरोपी-तरुण बोरा की उपस्थिति का संकेत देता है। यह स्पष्ट रूप से आरोपी-तरुण बोरा की उपस्थिति का संकेत देगा जैसा कि स्वीकार किया गया है।

एकमात्र इनकार यह है कि आरोपी ने अंधेपन में भाग नहीं लिया था

गवाह की आँखों को मोड़ना और न ही उस पर हमला करना।

37. राकेश कुमार उर्फ बबली बनाम। हरियाणा राज्य ने बताया

(1987) 2 एस. सी. सी. 34 में, यह न्यायालय सत्र न्यायाधीश के आदेश की पुष्टि करने वाले उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ एक अपील पर विचार कर रहा था, जिसके तहत अपीलार्थी और तीन अन्य व्यक्तियों को आई. पी. सी. की धारा 34 के साथ पठित धारा 242 के तहत दोषी ठहराया गया था। पुनः प्रशंसा करते हुए

अभिलेख पर साक्ष्य, इस न्यायालय ने देखा कि पीडब्लू 4, सुबे सिंह की प्रतिपरीक्षा में, घटना के समय अभियुक्त व्यक्तियों में से एक द्वारा पहनी गई कमीज के रंग के संबंध में एक सुझाव दिया गया था। इस न्यायालय द्वारा दिए गए सुझाव की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए बचाव पक्ष और जवाब इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि घटना के समय आरोपी धरम वीर की उपस्थिति मौके पर स्थापित की गई थी। हम पैराग्राफ 8 और 9 के जवाब में इस न्यायालय द्वारा की गई निम्नलिखित टिप्पणियों को उद्धृत करते हैं:

" 8. पीडब्लू 3, भगत सिंह ने अपनी जाँच में कहा कि उन्होंने घटना के समय आरोपी की पहचान कर ली थी। लेकिन दिलचस्प बात यह है कि उससे पूछताछ नहीं की गई कि वह आरोपी की पहचान कैसे और किस तरीके से कर सकता है, जैसा कि विद्वान सत्र न्यायाधीश ने बताया था। कोई सुझाव भी नहीं था

उसे दिया कि जगह अंधेरा था और यह नहीं था

मृतक के हमलावरों की पहचान करना संभव है।

9. पीडब्लू 4, सुबे सिंह ने अपनी जिरह में कहा कि आरोपी धरम वीर ने सफेद रंग की कमीज पहनी हुई थी। अभियुक्त की ओर से उसे यह सुझाव दिया गया था कि धरम वीर ने क्रीम रंग की कमीज पहनी हुई थी।

उस बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. के जवाब में। वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

उस समय आरोपी ने क्रीम रंग की शर्ट पहनी हुई थी न कि सफेद रंग की। विद्वान सत्र न्यायाधीश ने ठीक ही कहा है कि उपरोक्त सुझाव कम से कम उपस्थिति को साबित करता है घटना के समय मौके पर आरोपी धरम वीरा।

किसी भी तरह से दोषारोपण करना निश्चित रूप से अभियुक्त को बाध्य करेगा और अभियुक्त इस दलील पर बच नहीं सकता कि उसके वकील के पास अपने मुवक्किल के खिलाफ स्वीकारोक्ति की प्रकृति में सुझाव देने का कोई निहित अधिकार नहीं था।

39. बचाव पक्ष के वकील द्वारा किसी तथ्य की कोई भी रियायत या स्वीकृति निश्चित रूप से उसके मुवक्किल के लिए बाध्यकारी होगी, सिवाय कानून के मुद्दे पर रियायत के। एक कानूनी प्रस्ताव के रूप में हम अपीलकर्ताओं की ओर से प्रचार किए गए प्रस्तुतिकरण से सहमत नहीं हो सकते हैं कि प्रतिपरीक्षा में बचाव पक्ष के वकील द्वारा दिए गए सुझाव के लिए एक गवाह द्वारा दिया गया जवाब किसी भी मूल्य या उपयोगिता के योग्य नहीं है यदि यह किसी भी मामले में आरोपी को दोषी ठहराता है।

तरीके से।

अभियोजन पर निर्भर करता है। यह कानून का एक प्राथमिक सिद्धांत भी है कि अभियोजन पक्ष को अपने पैरों पर अपना मामला साबित करना होता है और बचाव पक्ष की कमजोरी से लाभ या लाभ प्राप्त नहीं कर सकता है। हम एक पल के लिए भी यह सुझाव नहीं दे रहे हैं कि यदि अभियोजन पक्ष अपने पैरों पर अपना मामला साबित करने में असमर्थ है, तो अदालत अभी भी बचाव पक्ष के वकील द्वारा गवाह को दिए गए सुझावों के जवाब के रूप में सबूत के बल पर किसी आरोपी को दोषी ठहरा सकती है। उदाहरण के लिए, वर्तमान मामले में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि तीनों के साक्ष्य प्रत्यक्षदर्शी आत्मविश्वास को प्रेरित करते हैं और उनके साक्ष्य में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि वे अविश्वसनीय गवाह हैं। इस तरह के निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद, हमारी राय में, अपने विचार को मजबूत करने के लिए हम निश्चित रूप से बचाव पक्ष के वकील द्वारा चश्मदीद गवाहों को दिए गए सुझावों, रात के समय में आरोपी व्यक्तियों के साथ-साथ चश्मदीद गवाहों की उपस्थिति स्थापित करने वालों को दिए गए जवाब पर विचार कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, यदि वे किसी भी तरह से दोषारोपण कर रहे हैं या अभिलेख पर किसी अन्य विश्वसनीय साक्ष्य के अभाव में स्वीकार के रूप में हैं, तो अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए अपने आप में सुझाव पर्याप्त नहीं हैं। यह सच है कि एक सुझाव का कोई साक्ष्य मूल्य नहीं है लेकिन कानून का यह प्रस्ताव [2023] एस. सी. आर. नहीं होगा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

हर समय सही रहें और किसी मामले में प्रतिपरीक्षा के दौरान बचाव पक्ष का वकील इस तरह का सुझाव दे सकता है - जो सीधे अभियुक्त के खिलाफ जा सकता है और वर्तमान मामले में ठीक यही हुआ है।

41. कानून का सिद्धांत कि एक आपराधिक मामले में, एक वकील को मुकदमे की प्रगति के दौरान अपने मुवक्किल के खिलाफ प्रवेश करने का कोई निहित अधिकार नहीं है, केवल उन मामलों में अच्छा होगा जहां

अभियोजन कानून में अनुज्ञेय नहीं है। उदाहरण के लिए, अभियोजन पक्ष की ओर से डॉक्टर की जांच करके पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट को साबित करना अनिवार्य है। अभियुक्त पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट की सामग्री को स्वीकार नहीं कर सकता है जिससे अभियोजन पक्ष को साबित करने के अपने कर्तव्य से मुक्त कर दिया जाता है।

42. इसलिए, हमारी राय है कि बचाव पक्ष के वकील द्वारा गवाह को दिए गए सुझाव और ऐसे सुझावों का जवाब होगा निश्चित रूप से यह साक्ष्य का हिस्सा है और अभियुक्त के अपराध को निर्धारित करने के लिए न्यायालय द्वारा अभिलेख पर अन्य साक्ष्यों के साथ भरोसा किया जा सकता है।

43. प्रतिपरीक्षा का मुख्य उद्देश्य अभिलेख पर सत्य का पता लगाना और मामले की सच्चाई जानने में न्यायालय की मदद करना है। यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि कई बार बचाव पक्ष के वकील स्वयं एक पैराग्राफ में प्रतिपरीक्षा के दौरान उत्पन्न होने वाली विसंगतियों को स्पष्ट करते हैं और दूसरे पैराग्राफ में खुद को विरोधाभासी बताते हैं। जिरह की रेखा हमेशा बचाव के आधार पर होती है जिसे वकील अभियुक्त का बचाव करने के लिए ध्यान में रखेगा। इस स्तर पर, हम एक द्वारा की गई टिप्पणियों को लाभ के साथ उद्धृत कर सकते हैं गोविंद पुत्र सोनेराम बनाम के मामले में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की खंड पीठ। 2005 Cri.LJ 1244 में एम. पी. राज्य की सूचना दी गई। पीठ ने पैराग्राफ 27 में निम्नलिखित टिप्पणी की:

" 27. प्रतिपरीक्षा का मुख्य उद्देश्य सत्य का पता लगाना और मानव गवाही में झूठ का पता लगाना है। यह या तो उस साक्ष्य के बल को नष्ट करने या कमजोर करने के लिए बनाया गया है जो एक गवाह पहले ही व्यक्तिगत रूप से दे चुका है या पक्ष के पक्ष में कुछ ऐसा निकालता है जो उसने नहीं कहा है या अपने पिछले इतिहास और वर्तमान आचरण से यह दर्शाकर उसे बदनाम करने के लिए कि वह श्रेय के योग्य नहीं है। यह याद रखना चाहिए कि जिरह एक कर्तव्य है, एक वकील अपने मुवक्किलों और बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. का ऋणी है।

वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

यह महान व्यक्तिगत गौरव और प्रसिद्धि की बात नहीं है। इसे होना चाहिए।

हमेशा याद रखा जाना चाहिए कि न्याय को अनुचित प्रतिपरीक्षा से पराजित नहीं किया जाना चाहिए। एक वकील का अपने प्रति कर्तव्य है कि यह सबसे कठिन कला है। हालाँकि, वह परिणाम में विफल हो सकता है लेकिन निष्पक्षता वकालत के महान तत्वों में से एक है। प्रतिभा और प्रतिभा का उद्देश्य आत्म-महिमा मंडन नहीं है, बल्कि यह सत्य को स्थापित करने, झूठ का पता लगाने, बनाए रखने के लिए होना चाहिए।

सही और न्यायपूर्ण और एक बेईमान के गलत कामों को उजागर करने के लिए गवाह। सत्य की खोज के लिए यह सबसे प्रभावी परीक्षण है। जिरह पक्षपात को उजागर करती है, झूठ का पता लगाती है और गवाहों की मानसिक और नैतिक स्थिति को दर्शाती है और क्या कोई गवाह उचित उद्देश्य से प्रेरित है या क्या वह अपने विरोधियों के प्रति शत्रुता से प्रेरित है। प्रतिपरीक्षा को आम तौर पर अधिवक्ता के कौशल की सबसे गंभीर परीक्षा माना जाता है।

और शायद यह उसके किसी भी अन्य कर्तव्यों से परे है

उसकी चतुराई का अभ्यास। एक बड़ी कठिनाई है

विश्वसनीय कौशल के साथ प्रतिपरीक्षा आयोजित करना। यह है। निस्संदेह एक महान बौद्धिक प्रयास। कभी-कभी पार

जाँच अनावश्यक अवधि मानती है, न्यायालय के पास शक्ति है

ऐसे मामलों में प्रतिपरीक्षा के नियंत्रण को नियंत्रित करना।

(गवाहों की प्रतिपरीक्षा पर रॉटसी को देखें)। न्यायालय को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि जिरह को उत्पीड़न या अपराध की पीड़ित को अपमानित करने का साधन नहीं बनाया जाए [पंजाब राज्य बनाम देखें। गुरमीत सिंह, 1996 एस. सी. सी. (सी. आर. आई.) 316] ”

44. गवाह को बदनाम करने या संभावनाओं की प्रधानता पर बचाव स्थापित करने की दृष्टि से प्रतिपरीक्षा के दौरान गवाह पर सुझाव दिए जाते हैं लेकिन यदि ऐसे सुझाव, किसी भी तरह से अभियुक्त को दोषी ठहराने वालों का जवाब निश्चित रूप से बाध्यकारी होगा और उसी के समर्थन में रिकॉर्ड पर अन्य सबूतों के साथ विचार किया जा सकता है।

45. हालाँकि, यह सब इस बात पर निर्भर करेगा कि सुझावों की प्रकृति और किस विचार को ध्यान में रखते हुए गवाह को ऐसे सुझाव दिए जाते हैं।

उदाहरण के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 376 के तहत बलात्कार के आरोप के मामले में, आरोपी के बयान में स्पष्ट इनकार और गलत निहितार्थ की याचिका थी, बचाव पक्ष के वकील द्वारा अभियोजक को उसकी ओर से सहमति के बारे में बाद में दिया गया सुझाव, अपने आप में, आरोपी की ओर से अपराध स्वीकार करने के बराबर नहीं होगा। बलात्कार के मामलों में, अभियुक्त के लिए एक से अधिक बचाव करने की अनुमति है।

[2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

बचाव पक्ष के वकील द्वारा अभियोजन पक्ष के गवाह को दिया गया सुझाव अभियुक्त की ओर से स्वीकार किए जाने के समान नहीं होगा। उसी समय, यदि अभियोजक की प्रतिपरीक्षा में बचाव पक्ष, सहमति के अपने वैकल्पिक मामले का समर्थन करने की दृष्टि से उत्तर प्राप्त करता है।

बलात्कार के अपराध के लिए अभियुक्त को आरोपित करने वाले सुझावों के रूप में प्रश्नों के लिए ऐसे सुझाव निश्चित रूप से अभियोजन मामले को आश्वासन देंगे और न्यायालय उसी पर विचार करने में उचित होगा। हम उस मामले का एक और उदाहरण दे सकते हैं जिसमें अभियुक्त निजी बचाव के अधिकार का अनुरोध करेगा। इस तरह का बचाव हमेशा अभियुक्त के लिए उपलब्ध होता है, लेकिन हालांकि यदि इस तरह का बचाव विशेष रूप से मुकदमे के दौरान नहीं लिया जाता है, फिर भी यदि रिकॉर्ड पर साक्ष्य से पता चलता है कि अभियुक्त ने अपने निजी बचाव के अधिकार का प्रयोग करते हुए मृतक को चोट पहुंचाई थी, तो न्यायालय निश्चित रूप से अभियुक्त के अपराध का निर्धारण करने में इस तरह के बचाव पर विचार कर सकता है। तथापि, यदि निजी बचाव के अधिकार के प्रयोग का संकेत देने वाले सुझाव के माध्यम से किसी गवाह के समक्ष कोई विशिष्ट प्रश्न रखा जाता है, तो न्यायालय इस तरह के सुझाव पर विचार करने में उचित होगा और यदि

अभियुक्त स्थापित हो जाता है तो वह निश्चित रूप से साक्ष्य में स्वीकार्य होगा।

रेस गेस्टे का सिद्धांत

46. हमने अभिलेख पर साक्ष्य से उभरते मामले के एक अन्य पहलू पर भी ध्यान दिया है। पी. डब्ल्यू. 3 नासिर रज्जाक खान

मौखिक गवाही (Exh. 10) ने बयान दिया है कि रात में लगभग 11.30 बजे, उसने 10-15 लड़कों को "साई कार ऑटो कंसल्टेंट" नाम की एक दुकान के सामने एक-दूसरे से झगड़ते देखा। उन्होंने आगे कहा कि उस समय पीडब्लू 1 असगर शेख आए और उन्हें बताया कि उनके सिर और हाथों पर चोटें आई हैं। असगर शेख ने नासिर को यह भी बताया कि वह फिरोज (पीडब्लू 2) के साथ पुलिस स्टेशन जा रहा था। असगर ने नासिर को आगे बताया कि अब्बास बेग गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। पीडब्लू 3 नासिर, असगर से उपरोक्त बात सुनकर, उस स्थान पर पहुंचे जहाँ अब्बास बेग (मृतक) घायल हालत में पड़ा था। यह ध्यान देने योग्य है कि पीडब्लू 3 नासिर की प्रतिपरीक्षा में उन्हें एक सुझाव दिया गया था

कि उन्होंने पीडब्लू 1 असगर शेख से पूछताछ की थी कि क्या हुआ था और असगर शेख ने बदले में नासिर को घटना सुनाई। बचाव पक्ष के वकील द्वारा पीडब्लू 3 नासिर को दिए गए इस सुझाव का सकारात्मक जवाब दिया गया। पीडब्लू 3 नासिर के साक्ष्य के इस हिस्से की पुष्टि पीडब्लू 1 असगर शेख के साक्ष्य से होती है।

बालू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

47. उपरोक्त साक्ष्य के एक टुकड़े का उल्लेख करने का कारण पीडब्लू 3 नासिर रज्जाक खान (एक्सएच। 10) इसे गवाह कहा जा सकता है। रेज़ गेस्टे का यह सिद्धांत सी. टी. 1872 की धारा 6 में सन्निहित है:

" 6. एक ही लेन-देन का हिस्सा बनने वाले तथ्यों की प्रासंगिकता। तथ्य जो, हालांकि मुद्दे में नहीं हैं, मुद्दे में एक तथ्य के साथ इतने जुड़े हुए हैं कि एक ही लेनदेन का हिस्सा हैं, प्रासंगिक हैं, चाहे वे एक ही समय और स्थान पर हुए हों।

या अलग-अलग समय और स्थान पर।

48. सुखर बनाम के मामले में। उत्तर प्रदेश राज्य ने (1999) 9 507 में सूचित किया, इस न्यायालय ने धाराओं के संबंध में कानून की स्थिति पर ध्यान दिया

7 अधिनियम 1872 का जवाब इस प्रकार है:

" 6. साक्ष्य अधिनियम की धारा 6 सामान्य नियम का एक अपवाद है जिसके तहत सुनी-सुनाई गवाही स्वीकार्य हो जाती है। लेकिन ऐसी सुनी-सुनाई बातों को प्रावधानों के भीतर लाने के लिए

धारा 6 की जो बात स्थापित करने की आवश्यकता है वह यह है कि यह अधिनियमों के लगभग समकालीन होना चाहिए और होना चाहिए

एक अंतराल नहीं है जो निर्माण की अनुमति देगा। द.

अतः स्वीकार किए जाने की इच्छा रखने वाले बयानों को कृत्यों के साथ समकालीन रूप से या उसके तुरंत बाद किया गया होगा। उपरोक्त नियम जैसा कि है विगमोर के साक्ष्य अधिनियम में कहा गया है:

" वर्तमान अपवाद के तहत [सुनने के लिए] एक उच्चारण द्वारा है

परिकल्पना, तथ्य को साबित करने के लिए एक दावे के रूप में प्रस्तुत की गई

दावा किया (उदाहरण के लिए कि एक कार-ब्रेक सेट किया गया था या सेट नहीं किया गया था),

और एकमात्र शर्त यह है कि इसे बनाया गया होगा

स्वाभाविक रूप से, अर्थात् किसी अवस्था के प्राकृतिक प्रवाह के रूप में उत्तेजना। अब उत्साह की यह स्थिति रोमांचक तथ्य के समाप्त होने के बाद भी बनी रह सकती है। घोषणा,

इसलिए, घटना के बाद भी स्वीकार्य हो सकता है, बशर्ते कि यह इस धारणा की अनुमति देने के लिए समय के करीब हो कि रोमांचक प्रभाव जारी रहा।

7. साक्ष्य पर सरकार (पंद्रहवाँ संस्करण) अधिनियम 1872 की धारा 6 की प्रयोज्यता से संबंधित कानून का सारांश इस प्रकार देता है:

" 1. घोषणाएँ (मौखिक या लिखित) उस अधिनियम से संबंधित होनी चाहिए जो जारी या प्रासंगिक है; वे केवल इसलिए स्वीकार्य नहीं हैं क्योंकि वे एक अधिनियम के साथ हैं।

23] 6 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

इसके अलावा घोषणाओं को इस तथ्य से संबंधित होना चाहिए और इसकी व्याख्या करनी चाहिए कि वे किस तथ्य के साथ हैं, न कि इससे पहले या बाद के स्वतंत्र तथ्य, जब तक कि ऐसे तथ्य किसी तथ्य का हिस्सा न हों।

लेन-देन जो निरंतर हो।

2. घोषणाएं तथ्य के साथ काफी हद तक समकालीन होनी चाहिए न कि केवल अतीत की कथा।

3. घोषणा और अधिनियम एक ही व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है,

या वे अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, पीड़ित, हमलावर और दर्शकों की घोषणाएँ। साजिश, दंगे में, आम में सभी संबंधितों की घोषणाएं

वस्तु स्वीकार्य हैं।

4. यद्यपि व्याख्या या पुष्टि करने के लिए स्वीकार्य है, या

अधिनियम के महत्व को समझें, घोषणाएं बताए गए मामलों की सच्चाई का प्रमाण नहीं हैं। "

50. अधिनियम 1872 की धारा 6 और 7 के जवाब में मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में, जहां तक पीडब्लू 3 नासिर रज्जाक खान के घटना के बारे में पता चलने के बयान की स्वीकार्यता है, पीडब्लू 1 असगर शेख से तुरंत कि अब्बास बेग पर गंभीर हमला किया गया था और असगर शेख को भी चोटें आई थीं और पीडब्लू 1 असगर शेख द्वारा अपने साक्ष्य में स्वीकार किया गया था, इसकी पूरी कठोरता से आकर्षित होगा।

आई. पी. सी. की धारा 300 को छोड़कर 4

51. अब हम आई. पी. सी. की धारा 300 के चौथे अपवाद के लागू होने के संबंध में प्रस्तुतिकरण पर विचार करेंगे। हालांकि, इससे पहले कि हम प्रस्तुत करने के लिए आगे बढ़ें, पीडब्लू 7, डॉ. श्रीकांत सुरेश चांडेकर, चिकित्सा अधिकारी, जिन्होंने मृतक के शव का पोस्टमार्टम किया और पोस्टमार्टम रिपोर्ट भी तैयार की, के मौखिक साक्ष्य को देखना उचित होगा।

लू सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. बी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

पी. डब्ल्यू. 7 के प्रमुख डॉ. श्रीकांत, एक्स. 18 , पढ़ता है

आई. डी. 1 पर मैं झूटी पर था जब अब्बास सनाउल्ला बेग के शव को खडक पुलिस पंचनामे के साथ मुर्दाघर ले आई थी। तदनुसार, मैंने सुबह 6:30 बजे से 7:30 बजे के बीच पोस्टमार्टम किया।

उसी दिन ए. एम. जाँच करने पर मैंने निम्नलिखित बाहरी चोटों को देखा: -

साफ कट फ्रैक्चर; चोट लगी-बाई कलाई चिकित्सकीय रूप से अनुप्रस्थ तिरछा 4x1 सेमी. अंतर्निहित अलना अपनी कुल मोटाई को शामिल करते हुए साफ कट फ्रैक्चर दिखाता है;

रैखिक घर्षण-बाई कलाई का डोर्सम 2 सेमी अनुप्रस्थ;

फाइट फोरआर्म फ्लेक्स या एस्पेक्ट मिडिल थर्ड ट्रांसवर्स पर जूरी गठित की गई; 3. 5 से. मी. गैपिंग-चिकित्सकीय रूप से त्वचा की गहरी पृष्ठ; दाहिने हाथ के डोर्सम पर चोट लगी-अनुप्रस्थ तिरछा मध्य समीपस्थ क्षेत्र, ढाई सेंटीमीटर गहरी त्वचा में छेद;

रैखिक घर्षण दाएँ और इन्फ्रैक्लैविकुलर क्षेत्र 4 से. मी. तिरछा।

रैखिक घर्षण-बाएँ मध्य स्कैप्युलर क्षेत्र ऊर्ध्वाधर तिरछा

5 सी. एम

दाहिने कंधे की पीठ पर घर्षण, 0.5 x 4 से. मी. तिरछा।

मध्य क्लैविकल का माप 7.5 से. मी. x 0.8 से 2.5 से. मी. निचला और घुमावदार मार्जिन के साथ चोट, ऊपरी और कोण साफ कट, मार्जिन साफ कट। दाहिने वक्ष में चोट लगना गुहा।

आंतरिक चोटों के कारण: - छाती की मांसपेशियों और फुफ्फुस में संबंधित चोटें। दाहिनी दूसरी पसलियों को आंशिक रूप से इसकी लंबी तीसरी दाहिनी पसलियों के ऊपरी किनारे के साथ काटकर साफ दिखाया गया है। दाहिनी दूसरी इंटरकोस्टल मांसपेशियों में स्टेब की चोट 1 से

x 3 से. मी.

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

फेफड़े के दाहिने ऊपरी भाग में चीरा लगी चोटें दिखाई देती हैं। वर्टिकल

तिरछा 1.2 सेंटीमीटर और 3.5 सेंटीमीटर। दाहिना मध्य भाग पूर्वकाल के पास चोट के माध्यम से और उसके माध्यम से

ऊतक से डेढ़ सेंटीमीटर नीचे-हिलम की ओर, छेद।

दाहिनी फुफ्फुसीय धमनी और सुपीरियर वेना कावा आंशिक रूप से लुमिना को काटते हैं। दाहिनी फुफ्फुसीय गुहा थक्कों से भरे खून से भरी हुई थी।

मेरी राय में उपरोक्त सभी चोटें एंटीमॉर्टम और रेसेन्ट थीं।

सिर और पेट की आंतरिक जांच के दौरान मैंने पाया

कोई चोट नहीं लगी, लेकिन अंग पीले हो गए थे। पेट में बिना किसी असामान्य गंध के पेस्ट के साथ तरल पदार्थ होता है।

मैंने पुलिस की मांग के अनुसार रक्त को समूह बनाने के लिए संरक्षित किया। मेरी राय में अब्बास की मौत सदमे और चाकू लगने से हुई

चोटें।

तदनुसार मैंने पी. एम. नोट जारी किए हैं। वे मेरे अंदर हैं

हस्ताक्षर और उस पर मेरे हस्ताक्षर हैं। इसकी सामग्री सही है। यह एक्सएच पर चिह्नित है। 19 . इसकी संबंधित आंतरिक चोटों के साथ चोट संख्या 9

सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त था। वह चोट तेज धार वाले नुकीले हथियारों के कारण हो सकती है।

चोट संख्या 9 तलवार के कारण हो सकती है अनुच्छेद संख्या 17 अब मुझे वही दिखाया गया है। चोट संख्या। 1 और 2 को कटी हुई चोटों के साथ-साथ रेखांकित टूटी हुई हड्डियाँ थीं। चोट संख्या। 1 अनुच्छेद संख्या 16-दरांती या अनुच्छेद संख्या 17 तलवार द्वारा 8 तक संभव हैं, क्योंकि दोनों के धारदार किनारे हैं। शुरू में, मैंने अस्थायी मृत्यु प्रमाण पत्र जारी किया था। अब मुझे दिखाया गया प्रमाण पत्र वही है। इस पर मेरे हस्ताक्षर हैं और इसके अंश सही हैं। यह अब प्रदर्शनी 20 में चिह्नित है।

53. प्रश्न को समझने के लिए, भारतीय दंड की धारा 300 में प्रदान की गई हत्या की परिभाषा का उल्लेख करना लाभदायक होगा जो नीचे उद्धृत है:

" 300. हत्या। - इसके बाद के मामलों को छोड़कर, गैर-इरादतन हत्या हत्या है, यदि वह कार्य जिसके द्वारा मृत्यु हुई है

कारण मृत्यु का कारण बनने के इरादे से किया जाता है, या बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आरा।

वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

दूसरा। यदि यह ऐसी शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से किया जाता है जो अपराधी जानता है कि उस व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना है जिसे नुकसान पहुँचाया गया है, या -

तीसरी बात। यदि यह किसी व्यक्ति को शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से किया जाता है और शारीरिक चोट पहुँचाने का इरादा है प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त है,

चौथा। यदि कार्य करने वाला व्यक्ति जानता है कि यह इतना आसन्न रूप से खतरनाक है कि यह सभी संभावनाओं में, मृत्यु या ऐसी शारीरिक चोट का कारण बनता है जिससे मृत्यु होने की संभावना है, और मृत्यु या ऐसी चोट के जोखिम के लिए बिना किसी बहाने के ऐसा कार्य करता है जैसा कि ऊपर कहा गया है।

दृष्टांत

(a) A उसे मारने के इरादे से Z को गोली मार देता है। Z परिणामस्वरूप मर जाता है। एक हत्या करता है।

(ख) ए, यह जानते हुए कि जेड ऐसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है कि

एक प्रहार से उसकी मृत्यु होने की संभावना है, जो उसे शारीरिक चोट पहुँचाने के इरादे से मारता है। Z प्रहार के परिणामस्वरूप मर जाता है। ए हत्या का दोषी है, हालाँकि प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में आघात स्वास्थ्य की अच्छी स्थिति में किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है। लेकिन अगर ए, यह न जानते हुए कि जेड किसी बीमारी के तहत श्रम कर रहा है, उसे ऐसा झटका देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में किसी व्यक्ति को नहीं मारेगा।

स्वास्थ्य की एक अच्छी स्थिति, यहाँ ए, हालाँकि वह शारीरिक चोट पहुँचाने का इरादा रखता है, हत्या का दोषी नहीं है, अगर उसका इरादा नहीं था मृत्यु का कारण बनना, या ऐसी शारीरिक चोट जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनती है।

(ग) ए जानबूझकर जेड को एक तलवार-कट या क्लब-घाव देता है जो प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में एक आदमी की मौत का कारण बनता है। Z परिणामस्वरूप मर जाता है। यहाँ, ए हत्या का दोषी है, हालाँकि उसका इरादा जेड की मृत्यु का कारण बनने का नहीं हो सकता है।

(घ) ए बिना किसी बहाने के लोगों की भीड़ पर भरी हुई तोप दागता है और उनमें से एक को मार देता है। ए हत्या का दोषी है, हालाँकि हो सकता है कि उसके पास किसी को मारने का पूर्व नियोजित इरादा न हो।

विशेष व्यक्ति।

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अपवाद 1. - जब गैर-इरादतन हत्या हत्या नहीं है।

दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अपराधी, गंभीर और अचानक उकसावे से आत्म-नियंत्रण की शक्ति से वंचित होने के बावजूद, उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है जिसने उकसाया या गलती से या दुर्घटना से किसी अन्य व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है।

उपरोक्त अपवाद निम्नलिखित प्रावधानों के अधीन है:

सबसे पहले। कि किसी व्यक्ति को मारने या नुकसान पहुँचाने के बहाने के रूप में अपराधी द्वारा उकसावे की मांग या स्वेच्छा से उकसाया नहीं जाता है।

दूसरा। कि कानून के पालन में की गई किसी भी चीज़ या ऐसे लोक सेवक की शक्तियों के वैध प्रयोग में किसी लोक सेवक द्वारा उकसावा नहीं दिया जाता है।

तीसरी बात। कि उकसावा निजी रक्षा के अधिकार के वैध प्रयोग में की गई किसी भी चीज़ द्वारा नहीं दिया जाता है।

स्पष्टीकरण। क्या उकसाना इतना गंभीर और अचानक था कि अपराध को हत्या के बराबर होने से रोका जा सके, यह तथ्य का सवाल है।

दृष्टांत

(a) A, Z द्वारा दिए गए उकसावे से उत्तेजित जुनून के प्रभाव में, जानबूझकर Y, Z के बच्चे को मार देता है। यह हत्या है, जितना कि बच्चे द्वारा उकसावा नहीं दिया गया था, और बच्चे की मृत्यु उकसावे के कारण किसी कार्य को करने में दुर्घटना या दुर्भाग्य से नहीं हुई थी।

(ख) Y इस पर ए. ए. को गंभीर और अचानक उकसाता है।

उकसाते हुए, Y पर पिस्तौल चलाता है, न तो इरादा रखता है और न ही खुद को जानता है कि Z को मारने की संभावना है, जो उसके पास है, लेकिन दृष्टि से बाहर है। ए किल्स जेड. यहाँ ए ने हत्या नहीं की है, बल्कि केवल दोषी है

हत्या।

(ग) ए को कानूनी रूप से जेड, एक बेलिफ द्वारा गिरफ्तार किया जाता है। ए गिरफ्तारी से अचानक और हिंसक जुनून के लिए उत्साहित होता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है, जितना कि एक लोक सेवक द्वारा अपनी शक्तियों के प्रयोग में किए गए काम द्वारा उकसाया गया था।

(घ) ए, जेड के समक्ष गवाह के रूप में उपस्थित होता है, एक मजिस्ट्रेट, जेड कहता है कि वह ए के बयान के एक शब्द पर विश्वास नहीं करता है, और ए के पास बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर है।

बी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

खुद को धोखा दिया। ए इन शब्दों से अचानक जुनून में चला जाता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है।

(ई) जेड की नाक खींचने का प्रयास। जेड, के अधिकार के अभ्यास में

निजी बचाव, उसे ऐसा करने से रोकने के लिए ए को पकड़ता है। परिणामस्वरूप ए अचानक और हिंसक जुनून में चला जाता है, और जेड को मार देता है। यह हत्या है, जितना कि उकसावे में था।

निजी रक्षा के अधिकार के प्रयोग में की गई चीज़ द्वारा देना।

() जेड स्ट्राइक बी. बी. इस उकसावे से हिंसक क्रोध के लिए उत्साहित है। ए, एक दर्शक, बी के क्रोध का लाभ उठाने का इरादा रखता है, और उसे जेड को मारने का कारण बनता है, उस उद्देश्य के लिए बी के हाथ में एक चाकू रखता है। B Z को चाकू से मार देता है। यहाँ बी ने केवल गैर इरादतन हत्या की होगी, लेकिन ए हत्या का दोषी है।

अपवाद 2. - दण्डनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अपराधी, व्यक्ति या संपत्ति की निजी रक्षा के अधिकार का सद्भावना से प्रयोग करते हुए, कानून द्वारा उसे दी गई शक्ति से अधिक है।

और उस व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनता है जिसके खिलाफ वह है

पूर्वविचार के बिना और इस तरह के बचाव के उद्देश्य के लिए आवश्यक से अधिक नुकसान करने के किसी भी इरादे के बिना रक्षा के ऐसे अधिकार का प्रयोग करना।

चित्रण

जेड ए को घोड़े पर चढ़ाने का प्रयास करता है, इस तरह से नहीं कि ए को गंभीर चोट लगे। ए एक पिस्तौल निकालता है। जेड हमले में बना रहता है। अच्छे विश्वास में विश्वास करना कि वह किसी और के द्वारा नहीं कर सकता है

मतलब खुद को घोड़े पर चढ़ने से रोकें, Z को गोली मार दें

मरा हुआ। ए ने हत्या नहीं की है, बल्कि केवल गैर-इरादतन हत्या की है।

अपवाद 3. - दण्डनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अपराधी, एक लोक सेवक होने के नाते या लोक न्याय की प्रगति के लिए कार्य करने वाले लोक सेवक की सहायता करने के नाते, दी गई शक्तियों से अधिक है।

उसे कानून द्वारा, और एक ऐसा कार्य करके मृत्यु का कारण बनता है जिसे वह सद्भावना से, ऐसे लोक सेवक के रूप में अपने कर्तव्य के उचित निर्वहन के लिए वैध और आवश्यक मानता है और बिना किसी बीमारी के

उस व्यक्ति के प्रति इच्छा होगी जिसकी मृत्यु हुई है।

अपवाद 4. - दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि अचानक झगड़े पर और अपराधी [2023] 6 एस. सी. आर. के बिना जुनून की गर्मी में अचानक लड़ाई में पूर्व-चिंतन के बिना प्रतिबद्ध।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

अनुचित लाभ उठाना या क्रूर या असामान्य रूप से कार्य करना तरीके से।
स्पष्टीकरण। ऐसे मामलों में यह मायने नहीं रखता कि कौन सा पक्ष प्रस्ताव देता है।
उकसाना या पहला हमला करना। अपवाद 5. - दण्डनीय हत्या हत्या नहीं है जब
व्यक्ति जिसकी मृत्यु के कारण हुई है, आयु से अधिक है
अठारह वर्ष, मृत्यु का शिकार होता है या मृत्यु का जोखिम लेता है अपनी सहमति।

चित्रण

ए, उकसावे से, स्वेच्छा से, जेड, अठारह वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति को आत्महत्या करने का कारण बनता है।
यहाँ, जेड की युवावस्था के कारण, वह अपनी मृत्यु के लिए सहमति देने में असमर्थ था; इसलिए ए ने हत्या को उकसाया है।

54. इस स्तर पर, आंध्र प्रदेश राज्य बनाम के मामले में इस न्यायालय के निम्नलिखित प्रस्तावों को संदर्भित करना भी लाभदायक होगा। बरापु पुन्नय्या और एक अन्य ने (1976) 4 एस. सी. सी. 382 में रिपोर्ट किया

इस न्यायालय ने हत्या और गैर-हत्या के बीच का अंतर निम्नलिखित तरीके से निर्धारित किया:

" 12. दंड संहिता की योजना में, "गैर-इरादतन हत्या" जीनस है और "हत्या" इसकी प्रजाति है। सभी "हत्या" "गैर-इरादतन हत्या" है, लेकिन इसके विपरीत नहीं। आम तौर पर बोलते हुए, "दोषी" हत्या "हत्या की विशेष विशेषताओं के बिना", है

" गैर इरादतन हत्या "। सजा तय करने के उद्देश्य से, इस सामान्य अपराध की गंभीरता के अनुपात में, संहिता व्यावहारिक रूप से तीन को मान्यता देती है।

दोषपूर्ण हत्या की डिग्री। पहला है, जिसे "प्रथम श्रेणी की गैर-इरादतन हत्या" कहा जा सकता है। यह गैर इरादतन हत्या का सबसे बड़ा रूप है, जिसे धारा 300 में "हत्या" के रूप में परिभाषित किया गया है। दोसरकें "दोषी" कहल जा सकैत अछि। दूसरी डिग्री की हत्या "। यह धारा 304 के पहले भाग के तहत दंडनीय है। फिर, "गैर-इरादतन हत्या" होती है

तीसरी डिग्री "। यह सबसे कम प्रकार का दोषी है। हत्या और इसके लिए दी गई सजा भी सबसे कम है।

तीन श्रेणियों के लिए प्रदान की गई सजाओं में से। इस डिग्री की दंडनीय हत्या के तहत दंडनीय है
धारा 304 का दूसरा भाग।

बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

13. "हत्या" और "दोषी" के बीच अकादमिक अंतर

हत्या हत्या के बराबर नहीं है "ने अदालतों को परेशान किया है

एक सदी से अधिक। यदि अदालतें हारती हैं तो भ्रम पैदा होता है द्वारा उपयोग किए गए शब्दों के
सही दायरे और अर्थ की दृष्टि

इन धाराओं में विधायिका, खुद को तैयार करने की अनुमति देती है

सूक्ष्म अमूर्तता में। पहुँचने का सबसे सुरक्षित तरीका

विभिन्न खंडों में उपयोग किए जाने वाले मुख्य शब्दों पर ध्यान केंद्रित रखें धारा 299 और 300।
निम्नलिखित तुलनात्मक तालिका

के बीच अंतर के बिंदुओं की सराहना करने में सहायक होगा

दोनों अपराध।

धारा 300

संख्या 299 बेटा गैर इरादतन हत्या करता है यदि

कुछ अपवादों के अधीन

गैर-इरादतन हत्या हत्या है यदि

जिसकी वजह से मौत हुई है

वह कार्य जिसके द्वारा मृत्यु

किया जाता है -

इरादा

मृत्यु का मामला दर्ज करने का इरादा; या

((i) पैदा करने के इरादे से

मृत्यु; या

इस तरह का कारण बनने का इरादा

(2) के इरादे से

चोट लगना जिससे मृत्यु होने की संभावना हो; या

इस तरह की शारीरिक चोट पहुँचाना

जैसे

संभावना
मृत्यु का कारण बनता है

अपराधी को पता है कि इसकी
है

वह व्यक्ति जिसके लिए नुकसान है
कारण; या

ज्ञान

(3) इस ज्ञान के साथ कि

ज्ञान है कि कार्य की संभावना है

वह मृत्यु है,

मृत्यु के रूप में संभावित शारीरिक चोट

मृत्यु या इस तरह के कारण

और बिना किसी बहाने के
उत्पन्न होने का जोखिम
मृत्यु या ऐसी चोट जो है
ऊपर बताया गया है।

14. धारा 299 का खंड (बी) खंड (2) से मेल खाता है।

और धारा 300 का (3)। पुरुषों की विशिष्ट विशेषताएँ
पास है -

खंड (2) के तहत आवश्यक ज्ञान जिसके

विशेष रूप से पीड़ित के ऐसे मामले में होने के संबंध में अपराधी

विशिष्ट स्थिति या स्वास्थ्य की स्थिति जो आंतरिक नुकसान पहुँचाती है

इस तथ्य के बावजूद, उसके कारण घातक होने की संभावना है

कि इस तरह का नुकसान प्रकृति के सामान्य तरीके से [2023] 6 एस. सी. आर. नहीं होगा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

सामान्य स्वास्थ्य या स्थिति में किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त। यह उल्लेखनीय है कि "मृत्यु का कारण बनने का इरादा" खंड (2) की एक अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। केवल अपराधी के साथ शारीरिक चोट पहुँचाने का इरादा विशेष पीड़ित की मृत्यु का कारण बनने वाली ऐसी चोट की संभावना का ज्ञान, हत्या को इस खंड के दायरे में लाने के लिए पर्याप्त है। खंड (2) के इस पहलू को धारा 300 में संलग्न चित्रण (बी) द्वारा व्यक्त किया गया है।

15. धारा 299 का खंड (बी) अपराधी की ओर से ऐसी किसी भी जानकारी को स्वीकार नहीं करता है। धारा 300 के खंड (2) के तहत आने वाले मामलों के उदाहरण ऐसे हो सकते हैं जहाँ हमलावर जानबूझकर मुट्ठी में प्रहार करके मौत का कारण बनता है।

यह जानते हुए कि पीड़ित एक बड़े हुए यकृत, या बड़े हुए प्लीहा या रोगग्रस्त हृदय से पीड़ित है और इस तरह के प्रहार से यकृत के टूटने, या प्लीहा या हृदय की विफलता के परिणामस्वरूप उस विशेष व्यक्ति की मृत्यु होने की संभावना है। यदि हमलावर को पीड़ित की बीमारी या विशेष कमजोरी के बारे में ऐसी कोई जानकारी नहीं थी, और न ही मृत्यु या शारीरिक चोट पहुँचाने का इरादा था।

मृत्यु का कारण बनने के लिए प्रकृति का सामान्य पाठ्यक्रम, अपराध हत्या नहीं होगा, भले ही मृत्यु का कारण बनने वाली चोट जानबूझकर दी गई हो।

16. धारा 300 के खंड (3) में, धारा 299 के संबंधित खंड (बी) में आने वाले "मृत्यु का कारण बनने की संभावना" शब्दों के बजाय, "प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में पर्याप्त" शब्दों का उपयोग किया गया है। जाहिर है, अंतर मृत्यु का कारण बनने वाली शारीरिक चोट और मृत्यु का कारण बनने के लिए प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में पर्याप्त शारीरिक चोट के बीच है। यह भेद ठीक है लेकिन वास्तविक है, और यदि इसकी अनदेखी की जाती है, तो इसके परिणामस्वरूप न्याय की विफलता हो सकती है। धारा 299 के खंड (बी) और धारा 300 के खंड (3) के बीच का अंतर इच्छित शारीरिक चोट के परिणामस्वरूप मृत्यु की संभावना की डिग्री में से एक है। इसे अधिक व्यापक रूप से रखने के लिए, यह मृत्यु की संभावना की डिग्री है जो यह निर्धारित करती है कि क्या एक गैर-इरादतन हत्या सबसे गंभीर, मध्यम या सबसे कम डिग्री की है। धारा 299 के खंड (बी) में "संभावित" शब्द केवल एक संभावना से अलग "संभावित" के अर्थ को व्यक्त करता है। शब्द "शारीरिक चोट. बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. के सामान्य पाठ्यक्रम में पर्याप्त।

वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

मृत्यु का कारण बनने वाली प्रकृति का अर्थ है कि प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए मृत्यु चोट का "सबसे संभावित" परिणाम होगी।

17. खंड (3) के अंतर्गत आने वाले मामलों के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि

अपराधी का इरादा मृत्यु का कारण बनना है, जब तक कि मृत्यु जानबूझकर शारीरिक चोट या प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त चोटों से होती है। राजवंत बनाम. केरल राज्य [ए. आई. आर 1966 एस. सी. 1874: 1966 पूरक एस. सी. आर. 230: 1966 क्रि एल. जे. 1509।] यह इस बिंदु का एक उपयुक्त उदाहरण है। 18. विरसा सिंह बनाम। पंजाब राज्य [ए. आई. आर 1958 एस. सी. 465: 1958 एससीआर 1495: 1958 क्रि एल. जे. 818।] इस न्यायालय की ओर से बोलते हुए न्यायमूर्ति विवियन बोस ने खंड (3) के अर्थ और दायरे को इस प्रकार समझाया। 1500):

" अभियोजन पक्ष को धारा 300, 'तीसरी' के तहत मामला लाने से पहले निम्नलिखित तथ्यों को साबित करना होगा। सबसे पहले, इसे काफी निष्पक्ष रूप से स्थापित करना चाहिए, कि एक शारीरिक चोट मौजूद है;

दूसरा, चोट की प्रकृति को साबित किया जाना चाहिए। ये विशुद्ध रूप से वस्तुनिष्ठ जांच हैं। यह साबित किया जाना चाहिए कि उस विशेष चोट को पहुँचाने का इरादा था, अर्थात्, कि यह आकस्मिक या अनजाने में नहीं था या किसी अन्य प्रकार की चोट का इरादा था। एक बार जब ये तीन तत्व मौजूद साबित हो जाते हैं, तो जांच आगे बढ़ती है, और चौथा यह साबित होना चाहिए कि ऊपर बताए गए तीन तत्वों से बनी वर्णित प्रकार की चोट प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त थी। जाँच का यह भाग विशुद्ध रूप से उद्देश्यपूर्ण और अनुमानित है और इसका अपराधी के इरादे से कोई लेना-देना नहीं है।

19. इस प्रकार विरसा सिंह में निर्धारित नियम के अनुसार

भले ही अभियुक्त का इरादा प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु का कारण बनने के लिए पर्याप्त शारीरिक चोट पहुँचाने तक सीमित था, और मृत्यु का कारण बनने के इरादे तक विस्तारित नहीं था, अपराध "हत्या" होगा। चित्रण

(ग) धारा 300 में संलग्न इस बिंदु को स्पष्ट रूप से सामने लाता है।

20. धारा 299 के खंड (सी) और धारा 300 के खंड (4) दोनों के लिए कारण बनने वाले कार्य की संभाव्यता के ज्ञान की आवश्यकता होती है। मृत्यु। इस मामले के उद्देश्य के लिए इन संबंधित खंडों के बीच अंतर पर अधिक विस्तार करना आवश्यक नहीं है।

सी आरा।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

यह कहना पर्याप्त होगा कि धारा 300 का खंड (4)

जहाँ अपराधी के बारे में जानकारी लागू हो

किसी व्यक्ति या सामान्य रूप से व्यक्तियों की मृत्यु की संभावना

के रूप में

किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों से अलग

होने के नाते

उसके आसन्न खतरनाक कार्य के कारण, एक के लिए अनुमानित है

व्यावहारिक निश्चितता। इस तरह का ज्ञान

अपराधी को उच्चतम संभावना का होना चाहिए, अधिनियम
किया गया है

अपराधी द्वारा बिना किसी बहाने के

मृत्यु या ऐसी चोट पहुँचाने का जोखिम उठाने के लिए

21. उपरोक्त परिप्रेक्ष्य से यह पता चलता है कि जब भी ए
होता है कि क्या अपराध है

अदालत का सामना इस सवाल से

" हत्या "या" गैर इरादतन हत्या ",

किसी मामले के तथ्यों पर, उसके लिए संपर्क करना सुविधाजनक होगा
होती है। जिस प्रश्न पर विचार किया जाना है

समस्या तीन चरणों में

पहला चरण यह होगा कि क्या अभियुक्त ने ऐसा किया है
मृत्यु का कारण बना हो। सबूत

ऐसा कार्य करना जिससे वह दूसरे की

और मृत्यु, विचार करने के लिए दूसरे चरण की ओर ले जाती है
"दोषपूर्ण" है

क्या अभियुक्त का वह कार्य

हत्या "जैसा कि धारा 299 में परिभाषित किया गया है। अगर इसका जवाब

यह निर्धारित करें कि क्या अभियोजन पक्ष द्वारा साबित किए गए तथ्य लाते हैं
किसी के दायरे में मामला

के चार खंडों में से

धारा 300 में निहित "हत्या" की परिभाषा। अगर जवाब दें।

इस प्रश्न के नकारात्मक होने पर अपराध होगा

" गैर इरादतन हत्या ", दंडनीय

धारा 304 के पहले या दूसरे भाग के तहत, निर्भर करता है, क्रमशः, के दूसरे या तीसरे खंड पर

धारा 299 लागू होती है। यदि इस प्रश्न में पाया जाता है

सकारात्मक, लेकिन मामला किसी भी अपवाद के भीतर आता है

धारा 300 में उल्लिखित अपराध अभी भी "दोषी" होगा।

हत्या ", के तहत दंडनीय नहीं हत्या

दंड संहिता की धारा 304 का पहला भाग।

55. हम अपने सामने मामले में उपरोक्त सिद्धांतों को लागू करते हुए पाते हैं

यहाँ इस बात पर कोई विवाद नहीं है कि मृतक की मृत्यु बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. के कारण हुई थी।

वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

हत्या और दुर्घटना या आत्महत्या के कारण नहीं। इसलिए हम,

0 यह विचार करने के लिए कि क्या घटना संहिता की धारा 300 में बताए गए किसी भी प्रावधान के भीतर आती है। 56. मामले को चौथे अपवाद के भीतर लाने के लिए, (2004) 11 एस. सी. सी. 381 में रिपोर्ट किए गए हिमाचल प्रदेश के प्रकाश चंद उटे के मामले में इस न्यायालय द्वारा बताए गए आवश्यक स्पष्टीकरण इस प्रकार है -

बनाम 0:

" आई. पी. सी. की धारा 300 के चौथे अपवाद में अचानक लड़ाई में किए गए कार्य शामिल हैं। उक्त अपवाद उकसावे के मामले से संबंधित है जो पहले अपवाद के दायरे में नहीं आता है, जिसके बाद इसका स्थान अधिक उपयुक्त होता। अपवाद एक ही सिद्धांत पर आधारित है, क्योंकि दोनों में अनुपस्थिति है।

अन्यथा करें। अपवाद 4 में उकसावा है जैसा कि अपवाद 1; लेकिन की गई चोट प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है।

उस उकसावे से। वास्तव में, अपवाद 4 उन मामलों से संबंधित है जिनमें एक झटका लगने के बावजूद, या

विवाद की उत्पत्ति में या में दिया गया कुछ उकसावा

झगड़ा किसी भी तरह से उत्पन्न हुआ होगा, फिर भी

दोनों पक्षों का बाद का आचरण उन्हें अपराध के संबंध में समान आधार पर रखता है। एक "अचानक लड़ाई" का अर्थ है आपसी उकसावे और दोनों पक्षों पर मार-पीट। तब की गई हत्या का स्पष्ट रूप से एकतरफा उकसावे के लिए पता नहीं लगाया जा सकता है, न ही ऐसे मामलों में पूरे दोष को एक तरफ रखा जा सकता है। यदि ऐसा था, तो अपवाद अधिक उचित रूप से लागू होगा।

अपवाद 1 हो। कोई पूर्व विचार-विमर्श नहीं है या लड़ने का दृढ़ संकल्प। अचानक एक लड़ाई होती है, जिसके लिए दोनों पक्षों को कमोबेश दोषी ठहराया जाता है। यह हो सकता है कि उनमें से एक ने इसे शुरू किया हो, लेकिन अगर दूसरे ने इसे अपने स्वयं के आचरण से नहीं बढ़ाया होता तो यह उतना गंभीर मोड़ नहीं लेता जितना उसने लिया था। तब आपसी उत्तेजना और उत्तेजना होती है, और यह है

दोष के हिस्से को विभाजित करना मुश्किल है जो इससे जुड़ा हुआ है

प्रत्येक योद्धा। यदि मृत्यु हो जाती है तो अपवाद 4 की मदद ली जा सकती है: (ए) बिना पूर्व-चिंतन के; (बी) अचानक लड़ाई में; (सी) अपराधी के अनुचित लाभ उठाए बिना या [2023] 6 एस. सी. आर.

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

एक क्रूर या असामान्य तरीके से काम किया; और (डी) लड़ाई होनी चाहिए

मारे गए व्यक्ति के साथ रहे हैं। एक मामले को अंदर लाने के लिए

अपवाद 4, इसमें उल्लिखित सभी सामग्री अवश्य मिलनी चाहिए।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि अपवाद 4 में होने वाली लड़ाई

आई. पी. सी. की धारा 300 आई. पी. सी. में परिभाषित नहीं है। इसे बनाने में दो लगते हैं

लड़ो। जुनून की गर्मी की आवश्यकता है कि इसके लिए कोई समय नहीं होना चाहिए

शुरुआत में विवाद। लड़ाई दो के बीच की लड़ाई है। और अधिक लोग चाहे वे हथियारों के साथ हों या बिना। यह नहीं है।

किसी भी सामान्य नियम का उच्चारण करना संभव है कि क्या होगा

इसे अचानक हुआ झगड़ा माना जाता है। यह तथ्य का सवाल है और

झगड़ा अचानक होता है या नहीं, यह अनिवार्य रूप से निर्भर करता है।

प्रत्येक मामले के सिद्ध तथ्यों पर। आवेदन के लिए

अपवाद 4, यह दिखाने के लिए पर्याप्त नहीं है कि अचानक

झगड़ा हुआ और कोई पूर्वधारणा नहीं थी। यह आगे भी होना चाहिए

यह दर्शाता है कि अपराधी ने अनुचित लाभ नहीं उठाया है या

क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य किया। अभिव्यक्ति "अनुचित" प्रावधान में उपयोग किए गए लाभ का अर्थ है "अनुचित"

ओ (जोर दिया गया)

लाभ "। 57. इस प्रकार, एक अपवाद के आवेदन के लिए अनिवार्य नहीं है

300 पर हमेशा यह होता है कि यह हत्या का मामला है लेकिन आरोपी दावा करता है

इसे उस धारा से बाहर लाने और इसे बनाने के लिए अपवाद

गैर इरादतन हत्या, जो हत्या के बराबर नहीं है। इसलिए हमें यह करना चाहिए कि

नहीं कि यह हत्या का मामला होगा और यह आरोपी के लिए है

अपवाद की प्रयोज्यता। अपवाद 4 निम्नानुसार है:

" अपवाद 4. - दंडनीय हत्या हत्या नहीं है यदि

गर्मी में अचानक लड़ाई में पूर्व-चिंतन के बिना प्रतिबद्ध

एक अचानक झगड़े पर और अपराधी के बिना जुनून का

अनुचित लाभ उठाना या क्रूर या असामान्य रूप से कार्य करना तरीका "।

58. प्रावधान के अवलोकन से पता चलेगा कि चार शर्तें

मामले को अपवाद 4 के भीतर लाने के लिए संतुष्ट रहें:

((i) यह एक अचानक लड़ाई थी;

((ii) कोई पूर्वधारणा नहीं थी;

((iii) यह कार्य आवेग की गर्मी में किया गया था; और (iv)

हमलावर ने कोई अनुचित लाभ नहीं उठाया था या क्रूरतापूर्ण कार्रवाई नहीं की थी तरीके से।

बालु सुदाम खाल्डे और ए. एन. आर. वी. महाराष्ट्र राज्य [जे. बी. पारदीवाला, जे.]

59. अपवाद 4 के एक सादे पाठ पर, यह प्रतीत होता है कि अपवाद 4 की मदद तब ली जा सकती है जब मृत्यु (ए) पूर्व-चिंतन के बिना, (बी) अचानक लड़ाई में, (सी) अपराधियों द्वारा अनुचित लाभ उठाए बिना या क्रूर या असामान्य तरीके से कार्य किए बिना; और (डी) लड़ाई मारे गए व्यक्ति के साथ हुई होगी। एक मामले को अपवाद 4 के भीतर लाने के लिए उसमें उल्लिखित सभी अवयवों को पाया जाना चाहिए।

60. हम पहले ही देख चुके हैं कि मृतक को कितनी चोटें आई हैं, जैसा कि पीडब्लू 7 डॉ. श्रीकांत के बयान से प्रतीत होता है।

जिन्होंने पोस्टमॉर्टम किया। दरांती और तलवार जैसे खतरनाक हथियारों से होने वाली चोटों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, जो शरीर के महत्वपूर्ण हिस्से पर लगाए गए थे, इस निष्कर्ष से कोई बच नहीं सकता है कि यह आई. पी. सी. की धारा 303 का मामला है।

61. हमारे लिए अपीलार्थी की ओर से उपस्थित विद्वान वकील की इस दलील को स्वीकार करना बहुत मुश्किल है कि मामला इसके दायरे में आएगा -

आई. पी. सी. की धारा 300 का अपवाद 4 और ऐसा लाभ अभियुक्त को दिया जाए। यह मानते हुए कि घटना पल की गर्मी में हुई थी और लड़ाई भी अचानक हुई थी, हमें इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि इसमें अपीलकर्ताओं ने मृतक पर एक खतरनाक हथियार से नौ बार किए, जो निहत्थे और असहाय था। आई. पी. सी. की धारा 300 के खंड (3) के अंतर्गत आने वाले मामलों के लिए, यह आवश्यक नहीं है कि अपराधी की मृत्यु का इरादा हो, जब तक कि मृत्यु जानबूझकर शारीरिक चोट या चोट लगने से होती है। प्रकृति के सामान्य पाठ्यक्रम में मृत्यु। राजवंत सिंह बनाम। ए. आई. आर. 1966 एस. सी. 1874 में उल्लिखित केरल राज्य इस बिंदु का एक उपयुक्त उदाहरण है।

62. मामले के समग्र दृष्टिकोण में, हम आश्चर्य हैं कि अपीलकर्ताओं द्वारा विवादित मामले में हस्तक्षेप करने का कोई मामला नहीं बनाया गया है।

उच्च न्यायालय का निर्णय और आदेश।

63. परिणामस्वरूप, यह अपील विफल हो जाती है और इसके द्वारा खारिज कर दी जाती है।

64. अभिलेख इंगित करते हैं कि दोनों अपीलार्थियों को वर्तमान अपील की अंतिम सुनवाई तक जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया गया था। अपीलार्थी संख्या 2 को जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया गया था।

दिनांकित 01.10.2010 आदेश और इसमें अपीलार्थी संख्या 1 को दिनांकित 04.03.2013 आदेश के माध्यम से जमानत पर रिहा करने का आदेश दिया गया था। 2001 के सत्र मामला संख्या 323 में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, पुणे की संतुष्टि के लिए उनके द्वारा प्रस्तुत जमानत बांड रद्द कर दिए गए हैं। दोनों अपीलार्थियों को आज से दो सप्ताह की अवधि के भीतर निचली अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया गया है।

रिपोर्ट

65. एक बार जब

अपीलार्थी विचारण न्यायालय के समक्ष आत्मसमर्पण कर देते हैं, तो वे

ए.

जैसा दंडादेश दिया गया था, उसे पूरा

करने के लिए न्यायिक अभिरक्षा में भेजा जाएगा।

66. लंबित आवेदनों, यदि

कोई हों, का निपटारा कर दिया जाएगा।

निधि जैन (सहायक: आदित्यराज

पटोदिया और राखी, एलसीआरएस)